RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 4 अंक 2 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

दिसम्बर, 2020

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

राजसमंद को अंतिम प्रणाम कर किरण हुई विदा

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

हार्दिक श्रद्धांजलि

जन जन की प्रिय एवं हमारी आदणीया

श्रीमती किरण माहेश्वरी

पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री एवं राजसमंद विधायक

के आकस्मिक निधन पर हम सभी श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

जगदीश पालीवाल
जिलाध्यक्ष, भाजपा युवा मोर्चा राजसमंद

भरत पालीवाल
पूर्व उप प्रधान, पंचायत समिति राजसमंद

मनोज कुमार पारीक
भाजपा नेता, राजसमंद

प्रकाश ट्रेडिंग कंपनी
प्रकाश सोनी 9460259292
पराग सोनी 8619562197
हिमांशु सोनी 7230096808

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा

वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

बनो सच की ताकत जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर अब आपकी जुबानी..
अब आप भी भेज सकते हैं खबर

ताजा खबरों से अपडेट रहने के लिए SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

सम्पादकीय

ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना

किसी राजनेता के चले जाने पर जनता को कभी इतना उदास होते नहीं देखा होगा, मगर राजसमन्द क्षेत्र के प्रत्येक गांव व क़स्बे में किरण माहेश्वरी के अकस्मात मृत्यु पर लोग हृदय से दुखी हुए। जब उनकी पार्थिव देह राजमार्ग से गुजरी तो भीम से राजसमंद व उदयपुर तक सड़क किनारे लोग पुष्प वर्षा कर रहे थे। एक अन्तिम झलक पाने की आकांक्षा में तीन चार घंटे तक सड़क किनारे खड़ी ये भीड़ किराये से नहीं बुलाई गई थी। ऐसा नजारा पूर्व में देश की सीमा पर किसी शहीद के सम्मान में ही देखा गया है। किरण माहेश्वरी इस क्षेत्र की नेता नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार अभिभावक थी, जिसे क्षेत्र के प्रत्येक नागरिक की चिंता रहती थी। देश की सबसे बड़ी देसुरी नाल सड़क दुर्घटना के समय रातभर घटनास्थल से देसुरी अस्पताल और फिर राजसमन्द आरके जिला अस्पताल तक घायलों के समुचित इलाज़ प्रबंधन के लिए पूरी रात जुटने वाली माहेश्वरी को सिर्फ एक नेता कहना नाकाफी होगा।

किरण ने यहां की जन भावनाओं की कद्र करते हुए उनकी मुख्य समस्याओं को हर बार जिम्मेदारी के साथ अपने कंधे पर लिया और समाधान के बाद ही विश्राम लिया। राजसमन्द झील भरने की आकांक्षा में दो बार द्वारकाधीश से चारभुजा तक की पैदल यात्रा कोई राजनेता नहीं, बल्कि एक अभिभावक ही कर सकता है। अभावग्रस्त लोगों की सहायता के लिए सर्व समाज के दो बार सामुहिक विवाह आयोजन कर एक जिम्मेदार अभिभावक की भूमिका का निर्वहन किया। मार्बल माइंस या मिनरल इण्डस्ट्री से संबंधित जब भी सरकारी संकट पैदा हुए उन्होंने भरपूर संघर्ष कर इंडस्ट्री को राहत दिलाई। टोल शुल्क के विवाद पर केन्द्रीय मंत्री से सम्पर्क कर पूरे भारत से विलग सिर्फ 50 रुपए के मासिक पास की सुविधा प्रदान कर क्षेत्र को बड़ी राहत प्रदान की। करीब डेढ़ दशक तक के कार्यकाल में माहेश्वरी की आमजन से आत्मिक जुड़ाव की कार्यप्रणाली भविष्य के विधायक के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेगी। प्रत्येक गरीब वंचित के सुख दुख की सहभागी किरण के जाने के बाद सभी के दिल से यही आवाज उठती हैं कि 'ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना...'।

विजय शर्मा
उप संपादक

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** जन-जन की लाडली किरण अब सिर्फ यादों में — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 1 :** कर्मयोगी थी किरण माहेश्वरी : डॉ. सत्यनारायण — पेज - 8
3. **राइजिंग अवेयरनेस :** Hope — पेज- 12
4. **व्यंग्य :** जहर भी जो पिलाता है कह कर दवा — पेज- 14
5. **तीखी मिर्ची :** पेड़ के ठूंठ यथावत — पेज - 16
6. **व्यंग्य :** झील किनारे मछली के लिए आटा — पेज - 18
7. **कविताएं :** मां मुझको जन्म लेने दो, शीत में प्रभात और गजल — पेज - 19
8. **राजस्थानी केणावतां :** ठंठनपाल री बहू — पेज - 20
9. **समसामयिकी :** कोरोना और किसान आंदोलन — पेज - 21
10. **विश्लेषण :** कृषि विधेयक उचित या अनुचित ? — पेज - 22
11. **व्यंग्य :** सावधान ! इस अंधी गली में आगे खतरनाक मोड़ है — पेज - 24
12. **समसामयिक प्रश्नोत्तरी** — पेज - 25
13. **व्यंग्य :** स्वयंवर बनाम साझा संकलन — पेज - 26
14. **राजप्रशस्ति महाकाव्यम् :** बीसवां और इक्कीसवां सर्ग — पेज - 27
15. **मेरा गांव मेरे लोग :** आदर्श दम्पत्ति — पेज - 28
16. **टेक्नीकल विंडो :** एयर क्वालिटी इंडेक्स — पेज - 30
17. **सीख :** आत्मविश्वास — पेज - 32
18. **स्वास्थ्य :** प्राणायाम — पेज - 33

जन जन की लाडली किरण

अब सिर्फ यादों में

राजसमन्द के जनमानस पर अपने आत्मिक प्रेम की छाप छोड़ने वाली किरण माहेश्वरी अब हमारे बीच नहीं रही, मगर यहां के शहर, गांव- ढाणी तक की जनता के दिलों में उनकी सौम्य मुस्कान युक्त छवि सदैव अमिट रहेगी। हर गरीब, वंचित के पास बैठना और उनकी बात सुनना उनके स्वभाव की सदैव प्राथमिकता रही और इसी के दम पर उन्होंने जनता के दिलों में जगह बनाई। केबिनेट मंत्री एवं भाजपा की केन्द्रीय उपाध्यक्ष पद तक रहने वाली किरण माहेश्वरी अपने क्षेत्र में जनता के सामने एक बड़े नेता की तरह नहीं, बल्कि एक कार्यकर्ता की तरह पेश आती थी। राजसमन्द में आचार्य निरंजननाथ के बाद किरण माहेश्वरी ही वो नेता थी, जिसे एक जननेता के तौर पर आमजन ने अपने सिर आंखो पर बिठाया। प्रत्येक गांव की महिलाओं में उनका विशेष स्नेह था। उनकी याददाश्त इतनी थी कि ज्यादातर महिलाओं और वृद्धजनों को भी देहाती भाषा में ही उनके नाम से बुलाया करती थी। सामान्यतया एक राजनेता की पहचान उस क्षेत्र के विकास कार्यों से ही आंकी जाती है, जबकि किरण माहेश्वरी की पहचान विकास कार्यों के साथ ही आमजन में एक सच्चे अभिभावक के तौर पर भी थी, जो हर सुख-दुःख में शामिल होती थीं। शहर के एक वार्ड की बात हो या किसी दूर दराज पंचायत के किसी छोटे से गांव की समस्या हो, हर क्षेत्र के लोगों की समस्या, शिकायत हमेशा उनकी डायरी में नोट रहती थी। खास बात यह थी कि जो भी व्यक्ति कोई समस्या लेकर आता या शिकायत करता, तो उसे बकायदा वापस लिखित में जवाब मिलता। इसी कार्यशैली से किरण माहेश्वरी की न केवल राजसमंद विधानसभा, बल्कि देशभर में उनके कार्यों की प्रशंसा होती रही और भाजपा संगठन में भी उन्हें कई अलग-अलग जिम्मेदारियां दी गई, जिस पर भी सदैव खरी उतरी।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

प्रारंभिक जीवन :

किरण माहेश्वरी का मूलत: रतलाम (मध्यप्रदेश) में जन्म हुआ। फिर घोसुंडा (चित्तौड़गढ़) निवासी सत्यनारायण माहेश्वरी से उनका विवाह हुआ। सत्यनारायण कांकरोली की जेके टायर फैक्ट्री एवं कोटा स्टोन में कार्यरत रहे। उस दौरान किरण माहेश्वरी उनके पति के साथ कांकरोली, राजनगर व पसूंद में रही, तभी वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक का अग्रिम महिला संगठन दुर्गावाहिनी की सदस्य बनकर समाजसेवा की शुरुआत की। फिर जब उनके पति उदयपुर शिफ्ट हुए, तो उदयपुर में भी दुर्गावाहिनी के साथ भाजपा महिला मोर्चा में सक्रियता से कार्य किया। फिर उदयपुर महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष भी रही। बाद में नगर निगम उदयपुर में पार्षद का चुनाव लड़कर सभापति बनी।

राजनीतिक जीवन :

उदयपुर में नगर निगम सभापति के साथ ही राजनीतिक जीवन की शुरुआत हो गई। वर्ष 2004 में उदयपुर- राजसमंद लोकसभा सीट पर भाजपा से किरण ने चुनाव लड़ा और कांग्रेस प्रत्याशी गिरिजा व्यास को हराकर सांसद निर्वाचित हो गई। तब केन्द्र में यूपीए सरकार थी। उसके बाद वर्ष 2008 में किरण ने 2008 में पहली बार राजसमंद विधानसभा की सामान्य सीट होने से चुनाव लड़ा और पांच हजार से भी ज्यादा वोट से जीत हासिल की। तत्पश्चात 2013 में दोबारा राजसमंद विधानसभा सीट से ही चुनाव लड़कर कांग्रेस प्रत्याशी हरिसिंह राठौड़ को 32 हजार से अधिक वोट से हराया, तब प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने पर वे केबिनेट मंत्री बनी, जिसमें जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग और उच्च शिक्षा मंत्रालय का दायित्व रहा। उसके बाद वर्ष 2018 में तीसरी बार कांग्रेस के नारायणसिंह भाटी को शिकस्त देकर तीसरी बार विधायक बनी। इस बीच भाजपा महिला मोर्चा में प्रदेशाध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रही और भाजपा केन्द्रीय संगठन में महामंत्री, महासचिव के बाद दो बार उपाध्यक्ष का कार्यकाल पूरा किया।

इन खूबियों से बनाई अलग पहचान

1. मजबूत आत्मविश्वास :

हर समस्या, शिकायत या कोई भी कार्य हो, उसके समाधान को लेकर अपने मजबूत आत्मविश्वास के दम पर जनता को आश्वस्त कर देती थी। फिर वह उसका समाधान खोजकर ही दम लेती थी। इसी कारण कोई भी कार्य हो, उस पर त्वरित निर्णय की क्षमता थी। कई बार जनता की समस्याओं पर तत्काल संज्ञान लेकर निस्तारण करवा देती थी और हर छोटे से बड़े कार्य की खुद ही जिम्मेदारीपूर्वक मॉनिटरिंग करती थी और इसी खूबी ने उन्हें सबसे अलग पहचान दी।

2. अपनत्व भाव :

जात-पात, ऊंच-नीच से ऊपर उठकर किरण का आमजन के साथ आत्मिक स्नेह था। वे शहर हो या गांव, जहां भी जिस व्यक्ति से मिलती, उसे अपना बना लेती थी। बच्चों को दुलारती, तो वृद्धजनों के पैर छुकर या हाथ जोड़कर उनके हाल-चाल जानती। इस दौरान वे महिलाओं व युवतियों से भी खास तौर से मुलाकात करती और उनका नाम जानती। फिर दोबारा जब भी उनसे मिलती, तो सबको नाम से ही संबोधित करती, जिससे महिलाओं में भी उनका खास जुड़ाव रहा। इससे क्षेत्र की महिलाएं व वृद्धजन भी उनके व्यवहार की कायल रहे।

3. संवेदनशीलता :

माहेश्वरी राजसमंद के आवास पर रही हो या उदयपुर, जयपुर सहित कहीं भी प्रवास पर रही हो, मगर राजसमंद के आकस्मिक समस्याओं पर सदैव सजग रही। ऐसे कई मौके आए, जब वे दिन ही नहीं, बल्कि रात-रातभर आमजन के बीच रहकर संवेदनशीलता का परिचय दिया। ऐसे में भले ही कांकरोली बस स्टैंड का मुद्दा, देसूरी दु:खांतिका या मार्बल इंडस्ट्रीज पर आया संकट। हर वक्त जनता के बीच जनता की समस्याओं को सुनते हुए उनके निस्तारण करते ही पाया गया।

4. धैर्यशीलता :

गीता के कर्म सिद्धांत का पालन करने वाली किरण माहेश्वरी हर विपरीत परिस्थिति में भी धैर्यशील बनी रही। विरोधियों द्वारा फैलाए गए भ्रम की स्थितियों में उन्हें प्रत्युत्तर देने की बजाय सदैव अपने कर्म पर एकाग्रता बनाए रखी। चुनाव के दौरान विपक्षियों द्वारा जनता के बीच बाहरी प्रत्याशी का माहौल बनाया गया, मगर इन्होंने इस माहौल में धैर्य रखकर जवाब देने की बजाय अन्य स्थानीय नेताओं की अपेक्षा जनता के कार्यों को ज्यादा महत्त्व दिया।

5. सुख-दु:ख में सहभागिता :

आमजन की हर छोटी-मोटी समस्याओं के निस्तारण लेकर भी माहेश्वरी हमेशा सतर्क रही। इसी ध्येय से राजसमंद में विधायक कार्यालय शुरू किया, नियमित खुलता और वहां आने वाले व्यक्ति की समस्या या शिकायत को सूचीबद्ध किया जाता। इसके लिए विधायक कार्यालय पर साप्ताहिक जन अभाव अभियोग शिविर भी लगाते थे। शहर व गांव-ढाणी में आमजन के हर सुख- दु:ख में भी शामिल होने का हरसंभव प्रयास करती थी। पूरे विधानसभा में कहीं भी किसी व्यक्ति का देहांत होता, तो उसकी जानकारी विधायक कार्यालय पर नोट हो जाती और जब भी उस क्षेत्र में माहेश्वरी का दौरा होता, तो संबंधित व्यक्ति के घर जाना नहीं भूलती थी।

6. महिला सशक्तिकरण :

शहर- देहात में महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी वे हमेशा अग्रणी रही। भाजपा में भी महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए सभी स्तर पर एक तिहाई महिला आरक्षण लागू करवाया। बालिका शिक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए राजसमंद शहर में गर्ल्स कॉलेज खुलवाया। राजसमंद पूर्व प्रधान देऊबाई खटीक का घूंघट एक सभा के दौरान उठाकर अन्य महिलाओं को भी घूंघट से बाहर आकर सशक्त बनने के लिए प्रेरित किया।

7. संगठन सर्वोपरि :

राष्ट्रवाद के साथ पद की महत्वाकांक्षा से परे भाजपा संगठन के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। इसी के दम पर उन्हें संगठन ने राष्ट्र स्तरीय की कई जिम्मेदारियां दी, जिसे माहेश्वरी ने बखूबी निभाया। उल्लेखनीय है कि संगठन निकाय चुनाव की प्रभारी नियुक्त करने पर वे कोटा में अपने कर्तव्य निर्वहन के दौरान ही कोरोना पॉजीटिव हुई और इस बीमारी ने उन्हें छीन लिया। वे कार्यकर्ताओं को भी अक्सर कहती रहती कि संगठन का कार्य कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता है।

8. प्रखर वक्ता :

किसी भी मुद्दे पर गहरी पकड़ व स्पष्टवादिता के साथ प्रखर वक्ता के तौर वह जानी जाती थी। विधानसभा में भी अक्सर उनके भाषणों तालियां गूंजती थी। पहली बार सांसद चुनाव के दौरान उदयपुर में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किरण माहेश्वरी का उद्बोधन सुनकर कहा कि ऐसी ऐसी प्रखर वक्ता की संसद की सख्त जरूरत है और इन्हें बहुत पहले ही आ जाना चाहिए था। माहेश्वरी के निधन पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी ने भी उनकी स्पष्टवादिता की प्रशंसा की।

9. धार्मिक आस्था :

किरण माहेश्वरी की चारभुजानाथ के साथ श्री द्वारकाधीश, श्रीनाथजी में अटूट आस्था थी। इसीलिए राजसमंद झील भरने की कामना को लेकर माहेश्वरी राजसमंद से चारभुजा तक दो बार पदयात्रा की। प्रत्येक पूर्णिमा पर श्रीनाथजी मंदिर में विशेष मनोरथ करवाते थे। **जयवर्द्धन** को दिए एक साक्षात्कार में किरण ने कहा था कि स्वामी विवेकानंद का वक्तव्य है कि धर्म भारत की आत्मा है। राजनीति व धर्म कभी अलग नहीं हो सकते। राष्ट्रसेवा का जज्बा होना चाहिए और देश के लोगों को धर्म में बांटकर राजनीति नहीं करनी चाहिए। इसी के तहत उन्होंने सामुहिक विवाह आयोजन भी करवाए, जिसमें तुलसी विवाह के साथ विभिन्न समाज के जोड़ों की शादी करवाई। इसके अलावा राजसमंद झील छलकने पर विशेष पूजा अर्चना कर चुनर ओढ़ाकर गई। ये आयोजन राजसमंद के इतिहास में ऐतिहासिक रहे।

10. आमजन से सीधा जुड़ाव :

किरण माहेश्वरी की सबसे खास खूबी यह थी कि उनका हर व्यक्ति से सीधा जुड़ाव था। राष्ट्रीय नेता होने के बावजूद अपने क्षेत्र की जनता से एक परिवार की तरह रहती थी और प्रदेश में मंत्री होने के बावजूद आमजन व उनके बीच कोई प्रोटोकॉल नहीं रहा। मंत्री रहते हुए भी वे गांव- ढाणी में एक जननेता की तरह लोगों से मिलकर उनकी समस्याएं सुनती थी। उनके दफ्तर में भी इसीलिए कांच या जूते बाहर उतारने की परम्परा नहीं रखी। उनके सामने हर आम व खास व्यक्ति के बैठने की एक समान व्यवस्था थी, जिससे कोई भी व्यक्ति बेहिझक अपनी समस्या उन्हें बता भी सकता था और वे हर व्यक्ति की बात आत्मियता से सुनती।

माहेश्वरी की श्रद्धांजलि के शब्दसुमन

वाकया उन दिनों का है जब स्व. अटल बिहारी वाजपेयी कांकरोली में जनसभा को संबोधित करने आए थे। तब किरणजी को भी संबोधन का अवसर मिला। उनके संबोधन के तुरंत पश्चात वाजपेयीजी बोल पड़े कि आपकी ज़रूरत तो केंद्रीय राजनीति में है। आप इतने दिन तक कहां थी ? फिर क्या था, किरणजी का केंद्रीय राजनीति में जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। दूसरा वाकया किरणजी के सांसद बन जाने के बाद का है, जब तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव उदयपुर प्रवास पर आए, तो उनकी आगवानी बतौर सांसद किरणजी माहेश्वरी ने की। इसी दौरान वे रेल मंत्री नाथद्वारा में श्रीनाथजी दर्शनों के लिए आए। मैं भी लोक अधिकार मंच प्रतिनिधि मंडल के साथ रेल मंत्री को मावली–मारवाड़ आमान परिवर्तन के लिए ज्ञापन देने पहुंचा था। रेलमंत्री को नाथद्वारा चौपाटी पर देखने भारी भीड़ उमड़ पड़ी। हर कोई उनसे मिलने को उतावला हो रहा था। भीड़ के उत्साह को देखकर लालू प्रसाद आह्लादित हो गए। बस, उसी समय सांसद किरण ने मौके की नजाकत को देखते हुए इसका फायदा उठाया और नाथद्वारा को ब्रॉडगेज से जोड़ने की मांग कर दी और हाथों हाथ बगैर कोई विचार विमर्श किए ही रेलमंत्री ने नाथद्वारा को ब्रॉडगेज से जोड़ने की घोषणा कर दी। वर्ष 2015 में एक अभियान के तहत शहर में सभी को नल कनेक्शन दिए जाने लगे पर अज्ञात कारणों से हमारी कॉलोनी सनसिटी के लिए कोई स्वीकृति नहीं मिली, जबकि 7 साल पहले ही पाइप लाइन डल चुकी थी। कॉलोनी वाले स्थानीय नेताओं के चक्कर काट कर थक चुके थे। तब मैंने तत्कालीन जन अभियांत्रिकी मंत्री किरण माहेश्वरी को एक ई–मेल भेजा। उन्होंने तुरंत ही एक्शन लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आदेश जारी कर दिए। अगले 10 दिनों में पूरी कॉलोनी को राहत मिल गई।

इसके अलावा कई शिकायतें भी रही, जिसका इज़हार मैंने सोशल मीडिया पर भी किया, परन्तु शिकायतें भी उन्हीं से होती है, जो उन्हें दूर करने का माद्दा रखते हैं। इनसे पहले किसी भी विधायक से कभी कोई शिकायत रही ही नहीं।

ऐसी थी हमारी नेत्री किरण जी माहेश्वरी।

शत शत नमन।

नीलेश पालीवाल
एडवोकेट, कांकरोली

चरैवेति- चरैवेति यही तो मंत्र था किरण जी का

गत विधायक चुनाव अभियान के दौरान किरणजी के **जयवर्द्धन** को दिए साक्षात्कार के समय विजयजी के साथ उपस्थित रहने के अवसर मिला। चूंकि किरणजी का प्रयास सदैव धरातल पर सघन जन संपर्क के माध्यम से चुनाव जीतने का रहा था। अत: चुनाव अभियान के दौरान यथा संभव साक्षात्कार के लिए मिलना मुश्किल ही रहता था। फिर भी मेरे व्यक्तिगत आग्रह पर उस दिन सुबह 6 बजे का समय दिया था, लेकिन 10 मिनट देरी से पहुंचने के कारण किरणजी क्षेत्र के दौरे के लिए निकल चुके थे। दूरभाष पर बात करने पर रात 11 बजे बाद के लिए समय मिला। कार्यकर्ताओं से आगामी दिवस की कार्ययोजना पर बात करते करते रात के साढ़े 12 बज चुके थे। आंखों में दिनभर की थकान स्पष्ट दृष्टिगत थी। अगले दिन अल सुबह पुन: संपर्क के लिए निकलना भी तय था। फिर भी सभी कार्यकर्ताओं के प्रस्थान के बाद आवाज देकर उनके साथ सामने बैठकर एक एक प्रश्न का पूरी पूरी गंभीरता के साथ जवाब दिया। यहां तक की बीच में एक दो प्रश्न को सुनते समय तो झपकी आ ही गई थी। फिर भी कार्य को टालने की बजाय तुरंत पूर्ण करने की आदत के कारण कुछ प्रश्नों को 2 बार सुनकर जवाब दिया, लेकिन अपनी सहजता को बनाए रखा। ऐसे थे किरण जी जो कभी किसी कार्य को भविष्य के लिए टालने के बारे में सोचते भी नहीं थे। ऐसे एक नहीं अनेकानेक प्रसंग है, जब किरण जी ने बड़ी से बड़ी समस्या का तत्काल ही समाधान किया। अधिकांश मीटिंग्स में हमेशा किरण जी सदैव समय पर होते थे। कार्यकर्ता देरी से पहुंचते थे, पर कभी गुस्सा नहीं किया। अनथक, सदैव सकारात्मक, हर पल, हर क्षण उर्जावान, चहरे पर गाम्भीर्य के साथ सहज भाव, लाखो कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरक, अनेको विरोधियों से बेपरवाह, सदैव संघर्षशील, लक्ष्य के प्रति जुझारू। राजसमन्द को जितना उन्होंने जाना और समझा और यहां जन्म लेने वालो ने भी नहीं समझा होगा। अपने व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन से समय काटकर जितना राजसमन्द के विकास लिए समय दिया, उतना शायद ही किसी अन्य राजनेता या कार्यकर्ता ने दिया होगा। विरले होते हैं, ऐसे राजनेता जो कार्यकर्ताओ के, आमजन के यहां तक की विरोधियो के ह्रदय में भी अपना स्थान बनाने में कामयाब होते है।

जितेन्द्र लड्ढा
विनय कम्प्यूटर राजसमंद

कर्मयोगी थी किरण माहेश्वरी

सत्यनारायण माहेश्वरी पत्नी स्व. किरण माहेश्वरी के साथ।

किरण से मेरा प्रथम परिचय वर्ष 1979 में उदयपुर में हुआ था। मेरे मित्र नरेन्द्र बल्दवा का विवाह उदयपुर के देवपुरा परिवार में हुआ। उनकी पत्नि नीलम किरण की बड़ी चचेरी बहन थी। विवाह परम्पराओं में वर एवं वधु पक्ष के मध्य हंसी मजाक एवं कटाक्ष करना सामान्य होता है। उसी समय किरण से मेरी भेंट हुई। कटाक्षों का सटीक उत्तर देकर किरण ने सबको प्रभावित किया था।

वर्ष 1980 के प्रारम्भ में नरेन्द्र बल्दवा ने हमारे संबंध की बातचीत चलाई। 15 अगस्त 1980 को हमारी सगाई हुई। किरण बाल्यकाल से ही मुम्बई में रहती थी। मैं चित्तौड़गढ़ जिले के एक छोटे से ग्राम घोसुण्डा का निवासी था। सगाई के समय मैं टाटा एक्सपोर्ट, देवास में सेवारत् था। मुम्बई जैसे महानगर में पली बढ़ी किरण का एक छोटे से गांव में संबंध होने पर कईयों को आश्चर्य हुआ था।

18 नवम्बर 1981 को हमारा विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। उस गांवों में घरों में शौचालय नहीं हुआ करते थे। साधारण परिवार का सामान्य घर, गांव का परिवेश, बोली में अन्तर होते हुए भी किरण सहजता से परिवार में घुल मिल गई। सहज व्यवहार, सरल चित्त एवं ग्राम्य परम्पराओं के सम्मान के कारण किरण ने सभी परिजनों एवं ग्रामवासियों के दिल में जगह बना ली।

विवाह के समय किरण मुम्बई के प्रतिष्ठित आर.ए. पोद्दार कॉलेज से बी.कॉम द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रही थी। विवाह के उपरान्त उन्होंने अपना स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण किया। उन्हें पेंटिंग एवं कुकींग में विशेष अभिरुचि थी। हमारे सभी संबंधियों को किरण ने अपनी बनाई हुए पेंटिंग भेंट की थी। गृहकार्यो के अतिरिक्त वे अपना समय पेंटिंग में ही व्यतीत करती थी। विवाह के उपरान्त हम देवास (मध्यप्रदेश) में रहने लगे। प्राय: प्रतिदिन हम चार मित्र किसी एक मित्र के यहां एकत्रित होते थे। हंसी मजाक, सामयिक विषयों पर चर्चा, ताश खेलना आदि में ही हम 2-3 घंटे व्यतीत करते थे।

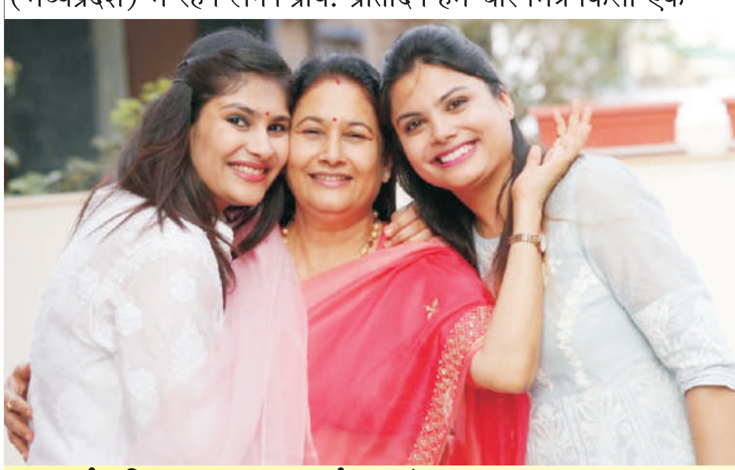

हमारे परिवार में राजनीतिक चेतना प्रारम्भ से ही थी, किन्तु राजनीति में प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं थी। टाटा एक्सपोर्ट के बाद मैंने मुम्बई में ब्लो प्लास्ट में ज्वाइन किया। हम मुम्बई आ गए। कुछ समय पश्चात ही ब्लो प्लास्ट ने रामगंज मण्डी की एएसआई कम्पनी को खरीद लिया। कम्पनी ने मुझे रामगंज मंडी स्थानान्तरित कर दिया। हम मुम्बई से राजगंज मण्डी आ गए।

रामगंज मण्डी एक छोटा कस्बेनुमा शहर है। कोटा स्टोन एवं धनिये की मण्डी के रुप में इसकी पूरे देश में ख्याति है। वर्ष 1985 में विश्व हिन्दू परिषद ने गंगाजल यात्रा के द्वारा राम मन्दिर आंदोलन को गति दी। किरण इस कार्यक्रम में प्रमुखता के साथ जुड़ी। यह किरण के लोक जीवन में प्रवेश का प्रथम अवसर था। किरण ने अपने संगी साथियों के साथ घर- घर जाकर गंगाजल यात्रा के स्वागत के लिए निमंत्रण दिया। कार्यक्रम में महिलाओं की अपार भीड़ जुटी। इससे किरण को उत्साह मिला। वे विश्व हिन्दू परिषद के कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लेने लगी। वर्ष 1987 में कम्पनी ने मेरा स्थानान्तरण कांकरोली ईकाई में कर दिया। हम रामगंज मण्डी से कांकरोली आ गए। यहां किरण ने महिलाओं का एक संगठन लेडिज क्लब राजसमन्द के नाम से बनाया। शांताजी चोरड़िया, तारा पगारिया, पुष्पा कर्णावट, अंशु जैन, सरोज सांदु, पुष्पा पाण्डया, आशा सुखवाल सहित बड़ी संख्या में महिलाएं इस क्लब से जुड़ी। अल्प समय में ही क्लब ने सामाजिक आयोजनों एवं सेवा कार्यो से बड़ी ख्याति अर्जित की। किरण दुर्गा वाहिनी में भी सक्रिय रही।

वर्ष 1990 में राजस्थान विधानसभा चुनावों में राजसमन्द से भाजपा ने शांतिलाल खोईवाल को प्रत्याशी बनाया। वे घोसुण्डा के ही रहने वाले थे। इससे पूर्व से ही मित्रता थी। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रचार में महिलाओं की कोई टीम नहीं है। किरण महिलाओं की टीम बनाकर प्रचार में सहयोग करें। किरण ने 8 महिलाओं का एक समूह बनाया। प्रातःकाल 8 बजे से रात 9 बजे तक शहर के प्रत्येक मोहल्ले में एवं कई गांवों में घर घर सम्पर्क का अभियान चलाया। प्रत्यक्ष राजनीति से यह उनका प्रथम परिचय था।

अपने 30 वर्षों के राजनीतिक जीवन में किरण ने कई पदों का दायित्व संभाला। जो भी दायित्व उन्हें दिया गया, वे पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ उसका निर्वाह करती थी। प्रतिदिन प्रातःकाल 7 बजे से देर रात तक वे अपने दायित्वों के निर्वाह में ही सचेष्ट रहती थी। राजनीति एवं लोक सेवा में सतत कार्यरत् रहते हुए भी वे परिवार के लिए समय निकाल लेती थी। परिवार के प्रत्येक कार्यक्रम में उनकी पूरी भागीदारी रहती थी। वे गीता में वर्णित कर्मयोगी ही थी।

सहज एवं सौम्य व्यवहार की धनी किरण माहेश्वरी हर किसी से अत्यंत सरलता से मिलती थी। उनसे मिलकर लगता ही नहीं था कि हम एक बड़े राजनीतिक व्यक्तित्व से मिल रहे हैं। इसी सहजता के कारण देश के प्रत्येक शहर में उनके घनिष्ठ संबंध बन गए थे। अपने घर ही बन गए थे। वे होटलों में रुकने के स्थान पर किसी परिचित के घर पर रुकना अधिक पसंद करती थी।

वर्ष 2020 कोरोना आपदा के लिए इतिहास में सदैव स्मरण किया जाएगा। मार्च में देश में पूर्ण बंदी लागू हुई। इस समय भी किरण ने फेसबुक लाइव, वेबेक्स, जूम आदि माध्यमों से अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओं से सतत सम्पर्क एवं संवाद बनाए रखा। अपने क्षेत्र का कई बार परिभ्रमण किया। पूर्ण बंदी के कारण क्षेत्रीय जनता को कोई कठिनाई अथवा संकट नहीं हो, इसका विशेष प्रयास किया। अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों को उच्च स्तर पर उठा कर समाधान करवाया। किरण ने राजस्थानी प्रवासियों और विशेषकर राजसमन्द जिले के प्रवासी बंधुओं की सहायता के लिए विशेष अभियान चलाया। मुम्बई, हैदराबाद, विशाखापट्टनम, बैंगलौर, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, बंगाल आदि कई प्रांतों के प्रवासी बंधुओं की घर वापसी एवं वहां खाद्यान्न व्यवस्था के लिए कार्य किया। किरण कोरोना आपदा में अग्रिम पंक्ति में रहकर जन सेवा का कार्य कर रही थी। उनकी व्यस्तता सामान्य समय से भी अधिक हो गई थी।

26 अक्टूबर 2020 को वे चित्तौड़गढ़ एवं कोटा प्रवास पर थी। स्थानीय चुनावों में पार्टी द्वारा दिए गए दायित्व के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की उनकी कार्यशैली थी। इस समय वे कोरोना संक्रमण की चपेट में आई। कोटा से पुनः उदयपुर आ गई। 29 अक्टूबर को उनका जन्म दिवस था। इसी दिन चिकित्सकीय परामर्श पर उन्हें गीतांजलि हॉस्पीटल में भर्ती करवाया गया। किरण हॉस्पीटल जाते समय अत्यंत सहज अनुभव कर रही थी। उन्होंने मुझे सावधानी रखने व चिन्तित नहीं होने को कहा। मैं एक सप्ताह में स्वस्थ होकर घर आ जाऊंगी। चिकित्सालय से भी वे पार्टी कार्यकर्ताओं और संगठन से बराबर सम्पर्क बनाए हुए थी। स्थानीय चुनावों के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दे रही थी। सब कुछ सामान्य लग रहा था।

5 नवम्बर तक उनका स्वास्थ्य सामान्य था। वे सहजता से बात कर रही थी। किन्तु 6 अक्टूबर को उनका स्वास्थ्य अचानक गिर गया। 7 अक्टूबर को उन्हे एयर एम्बुलेंस से गुड़गांव के मेदान्ता चिकित्सालय में ले जाया गया। दीपावली तक उनके स्वास्थ्य में स्थिरता बनी रही। किन्तु उसके बाद संक्रमण की गंभीरता बढ़ गई। कार्तिक पूर्णिमा के पावन दिन उन्होंने अपनी नश्वर देह को त्याग दिया। उनके परिजनो और स्नेहीजनों पर वज्रपात हो गया।

किरण सही अर्थो में कोरोना योद्धा थी। उन्होंने अग्रिम पंक्ति में रह कर महामारी का सामना किया। पूरे देश में उनके निधन से शोक की लहर दौड़ गई। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, कई केन्द्रीय मंत्रियों, संगठन के शीर्ष नेतृत्व, मुख्यमंत्री, राज्यपाल एवं राजस्थान सहित कई राज्यों के अग्रणी नेताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। भरी दोपहरी में एक सूर्य अस्ताचलगामी हो गया। राजसमन्द किरण के दिल में बसता था। राजसमन्द के चंहूमुखी विकास के लिए उन्होंने अनथक प्रयास किए। उनके महाप्रयाण से परिवार में बड़ी रिक्तता तो आई ही है। राजसमन्द वासियों को अपनी चहेती दीदी की कमी बराबर बनी रहेगी। ईश्वर उनकी महाप्रयाण की यात्रा सुखद और मंगलमय बनाएं, यही प्रार्थना है।

सत्यनारायण माहेश्वरी
उदयपुर

सहल, सरल थी किरण माहेश्वरी

मौत शाश्वत सत्य है, परंन्तु अल्पसमय में किसी का चले जाना अचंभित कर देता है...। हमेशा हंसती, मुस्कुराती एवं जनता के बीच मे रहकर उनके दुख दर्द दूर करने का प्रयास करने वाली सहज सरल ह्रदय राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी का यों चले जाना पूरे राजसमन्द के लिए अपूरणीय क्षति है। कोरोना ने हमसे एक जुझारू और कर्मठ राजनेत्री को छीन लिया। उनके लिए शब्दसुमन –

सूखे किसी मरुस्थल में मधुबन थी किरण,
बंजर सी धरती के लिए सावन थी किरण,
हौंसला हारने वाले, हर इक शख्स के लिए,
नाउम्मीदी में उम्मीद की किरण थी किरण।

बेशक, किरणजी केवल एक राजनेत्री ही नहीं थी, वरन राजसमंद की राजनीति में एक नई उम्मीद की किरण थी, जिन्होंने राजनीति के साथ महिला सशक्तिकरण को भी एक नई दिशा दी। कहने को तो किरणजी उदयपुर से थी, परन्तु अपने सहज एवं सरल स्वभाव से राजसमंद की जनता के बीच किसी भी स्थानीय नेता से ज्यादा लोकप्रिय हो गई। उनकी इसी सहज और सरल स्वभाव से जुड़ा एक संस्मरण याद आता है, जो कुछ ऐसा है कि– 2018 विधानसभा चुनाव मतदान दिवस से एक दिन पूर्व 6 दिसम्बर को हमें किरणजी के शहर के माटा मोहल्ला में चुनाव प्रचार में पधारने की खबर मिली। श्री द्वारकेश राष्ट्रीय व्यायामशाला भी उसी मार्ग पर होने के कारण हम सभी सदस्यों ने उनसे व्यायामशाला में पधारने का अनुरोध किया, परन्तु चुनावी व्यस्तता के कारण उन्होंने भारी मन से हमें मना कर दिया एवं माटा मोहल्ला की ओर निकल गई। थोड़ी ही देर में हमें सभापति महोदय का कॉल आया है कि किरणजी व्यायामशाला भी आ रही हैं। क्योंकि हमें मना करने के बाद किरणजी सहज महसूस नहीं कर रही थी और इसी के चलते कुछ ही देर में वे व्यायामशाला भी पधार गई। हमें अंदाजा था कि 5–10 मिनट रुककर वो निकल जाएगी, इसलिए व्यायामशाला के सदस्यों ने तुरंत ही प्रभु बजरंगबली की इकलाई आशीर्वाद स्वरूप किरणजी को पहनाकर उनका स्वागत कर दिया। मगर हमारा अंदाज गलत निकला, वक्त की आपाधापी और चुनाव की चिंता के बावजूद किरणजी व्यायामशाला के सुरम्य वातावरण में लगभग एक घंटे तक रुकी एवं हमसे चर्चा की। इस एक घण्टे में हमें किरणजी को नजदीक से जानने का एवं उनकी अनोखी शख्सियत और मधुर व्यवहार से रूबरू होने का मौका मिला। तभी हमने उन्हें चुनाव विजय बाद पुन: पधारने का निवेदन किया, जिसके लिए उन्होंने हामी भर दी।

जहां चुनाव जीतने के बाद अधिकतर नेता अपने वादे भूल जाते हैं, वहीं किरणजी अपना वादा याद रखते हुए विधानसभा चुनावों में भारी मतों से विजय के बाद 27 दिसम्बर को पुन: व्यायामशाला पधारी। ये वो दौर था जब किरणजी का गांव– गांव ढाणी ढाणी स्वागत हो रहा था और उनके पास खुद के लिए भी समय नहीं मिल रहा था, परन्तु ऐसे समय मे भी वो व्यायामशाला पर 3 घंटे रुकी।

खास बात ये थी कि व्यायामशाला में प्रवेश करते ही उन्होंने हमें कह दिया था कि उनकी तबियत थोड़ी नरम है और थोड़ी देर में निकल जाएगी, परन्तु व्यायामशाला परिसर के सकारात्मक प्रभाव एवं उपस्थित सदस्यों के स्नेह से अभिभूत होकर उन्हें समय एवं स्वास्थ्य की चिंता ही नहीं रही। दिसंबर की भरी ठंड में भी वे रात के 9.30 तक वहां रुकी। उनके संध्या भोजन में बारे में हमें पहले ही बता दिया गया था कि वे शाम को केवल तरल आहार लेती है। इस कारण हमने उनके लिए नारियल पानी एवं जूस की व्यवस्था कर दी थी। अन्य मेहमानों एवं उपस्थित सदस्यों के लिए ठंड के हिसाब से दाल– बाटी की व्यवस्था थी, परंतु हमारे साथ साथ उनके साथ पधारे मेहमान भी उस समय आश्चर्य करने लगे, जब उन्होंने कहा कि मैं भी आप सभी के साथ भोजन करूंगी। आज किरणजी हम छोड़कर जा चुकी हैं, परंतु ऐसे ही ढेरो किस्सों ओर यादगार पलों के साथ हमारी स्मृतियों में वे हमेशा जिंदा रहेंगी।

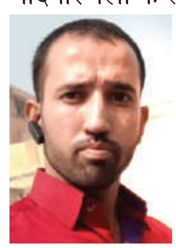

प्रकाश जांगिड़ 'प्रांश'
गणेशनगर, जावद

शब्द श्रद्धांजलि

ए प्रभु द्वारकाधीश सुनो, क्यो बीच मध्य में डुबो दिए ?
उदय किरण की किरणों को, अस्ताचल में छिपा दिया ?
जो जिले– गांव और शहर– शहर में, विकास गंगा में लगे रहे।
जांत–पांत और राजनीति की ऊंच–नीच से दूर रहे।
जो अंतिम क्षण से मातृभुमि के शतत् लगा तक बने रहे।।
शिक्षा, चिकित्सा, झील, सौन्दर्यीकरण, यातायात (सड़क), उद्योग के क्षेत्र में प्रबुद्ध नागरिकों, मातृ और युवा शक्ति को प्रेरणा देने वाली किरण माहेश्वरी सतत प्रयास से शहर– गांव और जिला उन्हें भूल नहीं पाएंगे।
प्रभु श्री द्वारकाधीश, श्रीनाथजी, चारभुजाजी, एकलिंगजी उन्हें संबल प्रदान करें, जिससे परिवार की वेदना को सहन की शक्ति दें।
युवा उनके अधूरे सपनों को साकार रूप देने की संकल्प लें।

भगवत शर्मा
जिला सचिव नगर विकास समिति राजसमंद

विधायक श्रीमती किरणजी माहेश्वरी के कर कमलों से मेरी फर्म **श्री प्रकाश ट्रेडिंग कंपनी , कृषि उपज मंडी कांकरोली** के यार्ड में शॉप नं. 13बी ब्लॉक का 13 फरवरी 2016 को उदघाटन किया था, लेकिन उस समय उनके ससुराल पक्ष में किसी का शोक था और मैंने फोन पर 1 दिन पहले किरणजी से बात की, तो उन्होंने तुरंत स्वीकृति दे दी थी कि मैं अवश्य आऊंगी। उसी दिन नगरपरिषद राजसमंद सभापति सुरेशजी पालीवाल और सभी पार्षदों का पुरानी कलक्ट्री में शपथ ग्रहण समारोह भी उच्च शिक्षा मंत्री किरणजी के द्वारा ही करवाया गया था, तो किरण जी का शोक होते हुए भी हमारे छोटे से निवेदन पर पधारी थी और हमारे परिवार द्वारा साड़ी, शॉल के द्वारा सम्मान किया गया था, लेकिन उन सबको वहीं पर किसी को देने के लिए कहकर छोड़कर चले गए, मतलब उनको किसी बात का गर्व नहीं था। ऐसी थीं, हमारी नेता किरणजी। मधुर व्यवहार और धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत महिला थी। मुझे याद है चुनाव प्रचार के लिए विट्ठल विलास बाग में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी किरणजी के लिए कहा था कि आपकी केन्द्र में जरूरत है और आप भाजपा नाम जरूर रोशन करेंगी। वास्तव में किरण जी उनके द्वारा कहे गए शब्दों पर खरी उतरी थी और राजसमंद के लिए वरदान साबित हुई, जिनकी स्मृति हम आने वाले युगों युगों तक याद रखेंगे और ऐसी नेत्री मेरे विचारों में राजसमन्द को मिलने वाली नहीं है। इस प्रकार थी स्व. श्रीमती किरण जी माहेश्वरी पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री जी। ओम अर्हम।

प्रकाश पराग हिमांशु सोनी 'जैन'
एवं समस्त सोनी परिवार कांकरोली
मो.9460259292

हमारी कर्मठ जन नेता किरणजी के कारण राजसमन्द की मार्बल इण्डस्ट्री चल रही है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जब मार्बल को बी-1 श्रेणी में डाल दिया गया था, तब आबादी के निकट चल रही माइन्स पर बंद होने की नौबत आ गई थी। तब तीन चार बार दिल्ली जाकर पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर से मिलकर कानून में परिवर्तन कराया और मार्बल इण्डस्ट्री को बी-2 श्रेणी डलवा कर इस उद्योग को बड़ी राहत प्रदान करवाई। जन समस्याओं के प्रति सदैव सजग रहने वाली नेता हमें सदैव याद रहेगी।

मनोज कुमार पारीक
भाजपा नेता राजसमंद

राष्ट्रीय नेता व पूर्व कैबिनेट मंत्री आदरणीय श्रीमती किरण जी माहेश्वरी चाहे हमारे बीच नहीं रहे हो, लेकिन इस क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए विकास कार्य, आमजन के बीच आपका सीधा संपर्क संवाद उनके साथ आपके स्नेह ममत्व को कभी भुलाए नहीं भूल सकते, मिटाए नही मिट सकता। उन्हें व्यक्तित्व व कृतित्व के लिए सदैव याद किया जाएगा। तेरा वैभव अमर रहे, मां हम दिन चार रहे न रहे। वैसे तो आपने अपनी कर्मभूमि राजसमन्द में अनगिनत कार्य किये हैं, एक स्मरणीय घटना जब आदरणीय किरण दीदी सांसद थे, सन 2007 में हमारे क्षेत्र में देश का सबसे बड़ा दुखद सड़क हादसा देसूरी की नाल में हुआ था, जिसमें 100 से ज्यादा लोगो की जान गई थी। तब जिला कलेक्टर का कॉल आते ही तत्काल घटना स्थल पहुंचे। फिर देसूरी अस्पताल के बाद जिला अस्पताल रातभर ठहरीं। फिर दूसरे दिन तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ सभी के अंतिम संस्कार में शामिल हुई। इस दौरान पूरे क्षेत्र में छाए गमगीन माहौल मन को विचलित करने वाले दृश्य हर परिस्थिति का सामना करते मेरे राजसमन्द की शेरनी किरण दीदी ने बहुत ही संवेदनशीलता से बेहद दुखद समय में पूरी हिम्मत के साथ अपना दायित्व निभाया और मेरा भी सौभाग्य रहा ऐसे संकट के समय जनसेवार्थ भागीदारी निभाने अपने दायित्व का निर्वहन करने उपस्थित रहा। भूतो न भविष्यति किरण दी आपसा ना कोय, आप सदैव अनुकरणीय है। आपके बताए मार्गदर्शन का अनुसरण ही सार्थकता है। ऐसी कई यादें हर व्यक्ति के स्मरण में है जिनका बखान कभी पूरा नहीं हो सकता।

किशोर गुर्जर
कांकरोली, राजसमंद

किरण मेडम सदैव जनता के लिए समर्पित रहीं। जनता की बड़ी से बडी मांग पर भी अपने आत्मविश्वास के दम पर उन्हें तुरंत ही आश्वस्त कर देती थी। मुझे एक किस्सा याद आता है जब फोरलेन का कार्य चल रहा था और केलवा में रेगर मोहल्ला के पास ब्रिज बनाने की मांग पर कई लोग एकत्रित हुए थे। तब किरण जी ने देखते ही तुरंत लोगों को आश्वस्त कर दिया कि यहां ब्रिज बन जाएगा, आप निश्चिंत रहे । यह कहकर हम वहां से कार में एक साथ निकले। रास्ते में उन्होंने कहा कि इस कार्य के लिए अब में दिल्ली बात करूंगी, मगर मुझे विश्वास है कि यह कार्य निश्चित रूप से हो जाएगा। इस तरह वे जनहित के कार्यो में सदैव आत्मविश्वास से पूर्ण रहती थी।

भरत पालीवाल
पूर्व उपप्रधान राजसमंद

किरणजी एक पूर्ण भारतीय नारी का धर्म निभाते हुए राष्ट्रहित एवं राजनीतिक क्षेत्र की महान विदुषी थी। उनका सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान कसार की समस्त गतिविधियों में बहुत रूचि थी। मेरे पांडीत्य कर्म के जीवन के कारण आहार-विहार व आचरण में बहुत मर्यादाएं रहती है। मैं एक बार साध्वी ऋतम्भराजी के अहमदाबाद प्रवास के दौरान इनके साथ गया, तो इनके पद पर रहने के बाद भी इन्होंने मुझे तुरंत अपने हाथ से फलाहार एवं भोजन बनाकर खिलाया। मैं एक बार उदयपुर में इनके आवास पर 8-10 लोगों के साथ किसी कार्यवश गया। इनके घर पर कोई नहीं था, तो इन्होंने स्वयं अपने हाथों से नाश्ता, चाय बनाकर पिलाई। आज के पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में भी इतने बड़े पद पर रहते हुए भी एक सहज भारतीयता का जीता जागता प्रमाण किरणजी थे। उनका हर पल राजसमंद की जनता को था। ऐसी महान विभूति को सादर नमन।

पं. उमेश द्विवेदी
सचिव सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान, कसार (चारभुजा)

एक छात्र ने स्वामी विवेकानंदजी से प्रश्न किया कि **सब कुछ खो देने से भी बुरा क्या है ?**

स्वामीजी ने उत्तर दिया– **सब कुछ खो देने से भी बुरा उस आशा और उम्मीद का खो देना है, जिसके बल पर सब कुछ वापस पाया जा सकता है।**

Hope might mean always looking on the bright side and taking challenges as opportunities. People talking in spiritual context might mean believing good things will happen. They might direct their hopes outward in prayer. Dictionary defines "hope" close to "wish": "to cherish a desire with anticipation: to want something to happen or be true."

Whatever the definitions are, hope in general means a desire for things to change for the better, and to want that better situation very much.

To have hope is to want an outcome that makes your life better in some way. It not only can help make a tough present situation more bearable but also can eventually improve our lives because envisioning a better future motivates you to take the steps to make it happen.

Whether we think about it or not, hope is a part of everyone's life. Everyone hopes for something. It's an inherent part of being a human being. Hope helps us define what we want in our futures and is part of the self-narrative about our lives we all have running inside our minds.

Dr Neel Burton, a book author writes that he always asks patients for what they hope for, because if they say "nothing" then that is a sign of depression or worse.

Having hope is important to the very act of being a human being. As Dr Judith Rich writes "Hope is a match in a dark tunnel, a moment of light, just enough to reveal the path ahead and ultimately the way out."

Sudha Chandran is an accomplished Bharatanatyam dancer, Indian film and television actress.

She met with an accident in 1981 and doctors had to amputate her right leg which means she could not dance anymore. She was determined to dance and so followed the story many of us know. She overcame her disability with the help of a prosthetic 'Jaipur Foot',

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

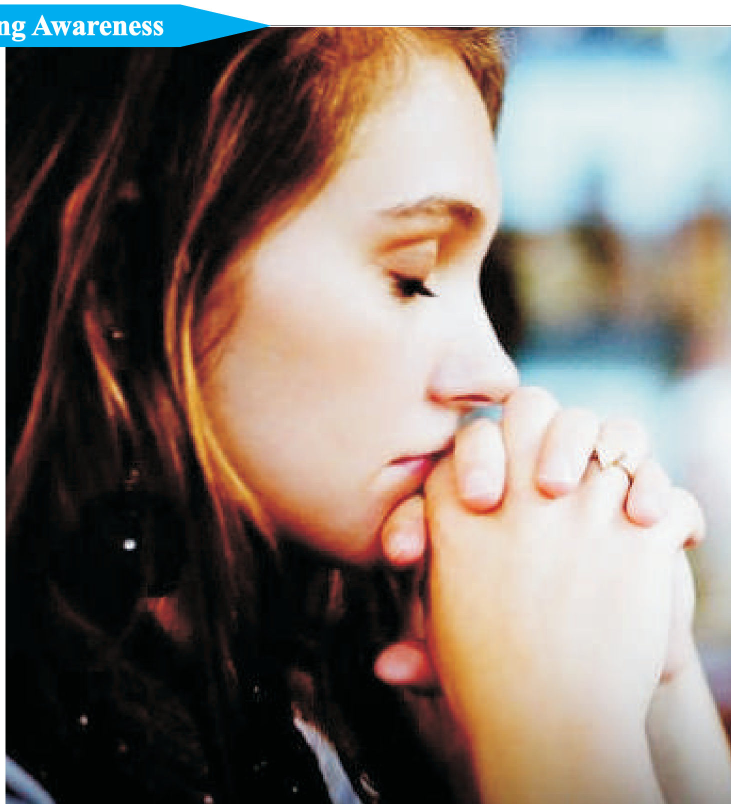

becoming one of the most highly acclaimed dancers of the Indian subcontinent. She not only proved her willpower but also proved to the world that disability doesn't mean end of life.

In Sudha's own words, "I view the accident as a blessing because without it I would be one amongst the million women who dance. But dancing with the Jaipur foot makes me one of a kind. We come in this life with a purpose. I have been a ray of inspiration to not only the disabled but also the able. I am a real-life heroine."

Sandeep Maheshwari is another name among millions who struggled, failed and surged ahead in search of success, happiness and contentment. Just like any other middle-class guy, he too had a bunch of unclear dreams and a blurred vision of his goals in life. All he had was an undying learning attitude to hold on to. Rowing through ups and downs, having number of failures in his pocket but didn't leave the hope and kept on trying and we can see milestones-

- Creative Entrepreneur of the Year 2013 by Entrepreneur India Summit
- One of India's Most Promising Entrepreneurs by "Business World" magazine
- Star Youth Achiever Award instituted by the Global Youth Marketing Forum
- Young Creative Entrepreneur Award by the British Council, a division of the British High Commission
- Pioneer of Tomorrow Award by the "ET Now" television channel.

Everybody, be it children, youth or the old ones does face the failure and challenges in life for sure but those who give up hope are actually the failures and those who determines to move ahead with hard work wins with the HOPE behind their success.

Let's have a hope in difficult time and win the battle.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International
School Nathdwara

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे
E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

जहर भी जो पिलाता है कह कर दवा

हैं कुछ ऐसे भी इस दौर के चारागर ए ज़हर भी जो पिलाते हैं कह कर दवा। ये शेर मेरी बहुत पुरानी ग़ज़ल से है, जिसे ब्लॉग पर 2012 में लिखा पोस्ट किया हुआ है और ये ग़ज़ल मेरी आम सी रचना है, जिसको किताब छपवानी होगी, तब शामिल नहीं किया जा सकता है। दवा के नाम पर ज़हर देने वाले लोग होते हैं, तो ऐसे भी लोग होते हैं, जो दवा ही नहीं देते और सबकी नज़र से बचे रहते हैं। उन पर किसी क़त्ल का इल्ज़ाम नहीं लगता है। ये बताना ज़रूरी लगा मुझे किसी से घबराकर डर कर नहीं, बल्कि इसलिए बताया है कि ऐसे लोग कोई अभी नहीं दिखाई दे रहे बल्कि पहले भी मिलते रहे हैं। किसानों की बारी अब आई है, जबकि कितने लोग पहले उनके इसी तरह के इलाज से बेहाल होकर झांसे में आकर अपना सब जो भी जीवनभर की मेहनत की कमाई थी लुटवा चुके हैं। किसान उनकी बात पर भरोसा नहीं करते कि यही ज़हर उनके दुखों का सही इलाज है, मगर किसान कोई सिरफिरे आशिक़ नहीं किसी फिल्म वाले जो कव्वाली गाते हैं, न तो कारवां की तलाश है अब न तो हमसफ़र की तलाश है, जो दवा के नाम पे ज़हर दे, उसी चारागर की तलाश है। बरसात की रात फिल्म की क्या खूबसूरत कव्वाली है मधुबाला जैसी खूबसूरती की मिसाल नायिका और साहिर लुधियानवी जी की लिखी रचना रोशन का संगीत मन्ना डे और आशा भौंसले की आवाज़। जाने क्यों ऐसे लोगों का धंधा कभी मंदा नहीं होता, जिनको लेकर दूर दूर तक खबर पहुंचती रहती है कि अमुक गांव या छोटे से शहर या किसी अनजान वीरान जगह कोई पुड़िया देता है, जो गंभीर बीमारी को ठीक कर देती है। लोग इधर उधर से निराश उनके पास चले जाते हैं, बाद में जो होता है किसी को पता नहीं चलता और जब वास्तविकता समझ आती है, हाथ मलने से होता कुछ नहीं। हम समझते हैं जो स्वास्थ्य सेवाओं से संबंध रखते है कि वो लोग वास्तव में कुछ बेहद हानिकारक दवाओं को बिना सही जानकारी के जैसे कुछ स्टीरॉइड्स होते हैं अथवा दमे के लिए या नशे की गोलियों को पीसकर पुड़िया बनाकर देते हैं।

उनका असर ऐसा होता है कि रोग के लक्षण नहीं रहते रोग खत्म होने की जगह और कितने रोग मिलते जाते हैं। नशामुक्ति की बात करने वाले खुद नशा करते ही नहीं इक नशा छुड़वाने को दूसरा करवाने लगते हैं।

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

कनक कनक से सौ गुनी मादकता अधिकाय दोहा बदलकर लिखना पड़ेगा क्योंकि सत्ता से बड़ा नशा और दौलत से बढ़कर मदहोशी कोई नहीं इनके होने पर आदमी आदमी नहीं रहता और ज़मीन पर पांव नहीं पड़ते आकाश के उड़ान भरते रहते हैं। सरकार जनाब को जब समझ आया कि पांव तले ज़मीन भी चाहिए तो उनको भगवान विष्णु के वामनावतार लेकर इक बौने ब्राह्मण बन रहने को राजा बलि से तीन कदम ज़मीन देने का वचन मांग लिया। पहले कदम में सारी पृथ्वी दूसरे में देवलोक अपना आकार बढ़ाकर लेने के बाद तीसरा पांव रखने को राजा बलि को अपना सर सामने करना पड़ा और पाताल लोक में जाना पड़ा था। तीन कानून, तीन पांव में धरती पाने जैसा ही है, लेकिन किसान राजा बलि की भूल नहीं दोहराना चाहते हैं। उनको माजरा समझ आने लगा है।

2014 में देश को ऐसा ही नीम हकीम खतरा ए जान ऐसा मिला कि मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की। उस राजनैतिक दल के पास वही पुड़िया वाला बाबा संत हकीम वैद डॉक्टर सभी कुछ है। टीवी पर देखते हैं, उस दल का जो भी कोई किसी भी विषय पर समस्या से लेकर धर्म और राजनीति तक चर्चा अथवा ब्यान देते समय वहीं इक नाम अवश्य बार बार दोहराता है। वो शख्स उसकी सरकार जैसे राम नाम जपने के बिना भक्ति सिमरण जयकारा लगाना भूलना नहीं सभी दोहराते हैं। उनके पास बस वही इक नेता सब कुछ है बाकी दल के सदस्य से नेता तक गिनती में नहीं हैं गिनवाए जाते हैं कहने को संख्या लाखों करोड़ों लेकिन कोई हैसियत नहीं। ये चाटुकारिता की आखिरी हद है जहां किसी को भगवान बनाया जाता है और उनके चाहने वाले भक्त कहलाते हैं, जिनको ध्यान रहता है जिसको भगवान कहा है उसकी हर बात सही और सच है। उसका झूठ भी इनको सच से अधिक अच्छा लगता है। बस अब उनको संविधान न्याय लोकतंत्र में विचारों का मतभेद या विरोध अपने नेता से असहमत होने वाले लोग भाते नहीं हैं। उनको कोई ये नहीं समझा सकता है कि चुनाव जीत जाने से किसी नेता को जनभावनाओं के ख़िलाफ़ निर्णय करने की मनमानी करने का अधिकार नहीं होता है। जिन लोगों ने आपको सत्ता पर बिठाया है उनके साथ अहंकार की भावना का अंजाम आपातकाल का नतीजा बाद में सामने आता है, तब बड़े बड़े सत्ताधारी नेताओं की ज़मानत ज़ब्त हो गई थी। जिनकी आलोचना करते हैं उनकी तरह से आचरण करना तो लगता है समय से सबक नहीं सीखा है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की 25 जून 1975 की बात शायद याद दिलवानी ज़रूरी है। मुझे कभी नहीं भूला उनका भाषण दिल्ली के रामलीला मैदान में खुद जाकर सभा में सुना था, ये मेरे लिए बड़ी खुशनसीबी की बात है। तब देशभर में विपक्षी दलों का विरोध का दिल्ली की गद्दी पर बैठे सत्ताधारी के ख़िलाफ़ जारी था और जेपी ने अपने संबोधन में इक बात कही थी। सुरक्षा बलों से कहा था कि क्योंकि शांतिपूर्वक विरोध करना जनता का संवैधानिक अधिकार है, इसलिए जब लोग ऐसा कर रहे हों, तब आपको किसी सत्ताधारी नेता या अधिकारी के आदेश पर उनका दमन करने को लाठी गोली नहीं चलानी चाहिए।

क्योंकि देश की पुलिस या सुरक्षा बल देश और संविधान और न्याय के लिए हैं, अत्याचार करने को नहीं है और अन्य अत्याचारी निर्देश को नहीं मानना चाहिए। आपातकाल घोषित करने को उनका भाषण आधार बनाया गया था। विडंबना की बात है कि जो आजकल सत्ता पर काबिज़ हैं वो आपातकाल की निंदा करते हैं, मगर उस समय के सत्ताधारी से बढ़कर निरंकुश आचरण कर रहे हैं। उस समय किसी को हर कीमत पर अपनी कुर्सी बचानी थी और आज के सत्ताधारी को भी ज़िद है कि अपने थोपे जनविरोधी कानूनों को हटाना नहीं, बल्कि उसको अच्छी फायदेमंद दवा बताकर पिलाना है, किसान जिसे ज़हर समझते हैं, पीना नहीं चाहते हैं। खेल तमाशा किसी और का है, खिलाड़ी कौन है और तमाशबीन कौन, लेकिन जिसके पास गेंद बल्ला है, बहुमत है। उसका दावा है पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी सभी खेलना उसी को है। बाक़ी मैदान से बाहर खड़े रह चुप चाप खेल का सत्यानास होते देख ताली बजाएं। अंपायर खुद वही है कौन आउट करार दे सकता है, विपक्ष की हर गेंद नो बॉल घोषित है। गज़ल पढ़कर समझना।

डॉ. लोक सेतिया
मॉडल टाउन, फतेहाबाद
हरियाणा, 9416792330

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग
सभी
प्रकार की
खेलकूद
सामग्री
मिलने का
राजसमंद
में एकमात्र स्थान
शक्ति स्पोर्ट्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

सादर अनुरोध
पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।
संपर्क : 94142-39648

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

पेड़ के ठूंठ यथावत

झील किनारे पेड़ कटने पर इतना हंगामा क्यों हो रहा है? क्या पहली बार पेड कटा है? इससे पहले आपने पेड़ कटते नहीं देखा। झील किनारे पेड़ कटे, तो आपने देख लिया, मगर पूरे जंगल साफ हो गए, किसी ने नहीं देखा। जब से आरी नामक यंत्र का आविष्कार हुआ है, तब से लगातार पेड़ कटते आए हैं। इन पेडों से फायदा भी क्या है? ऑक्सीजन मिलती है, तो वह तो आजकल सिलेंडर से भी मिल जाती है, हमें इन कांटेदार पेडों की क्या परवाह! पहले इन्सान बड़े- बड़े पेड़ की गोद में छोटे से घर में रहता था, मगर वही आजकल बड़े से घर में गमले के छोटे छोटे पौधों के साथ रहता है, जिसका फायदा यह हुआ कि बड़े पेड़ों पर होने वाला पक्षियों का शोरगुल अब नहीं सुनाई देता है। वरना आधुनिक इन्सान चैन से सो भी नहीं सकता था। इन पक्षियों को क्या पता कि आज के इन्सान के लिए दिन की नींद कितनी जरुरी हैं, वह दिन में कम और रात के अंधेरे में ज्यादा चलता है। आजकल सभी बेइमानी के काम ईमानदारी के साथ रात के अंधेरे में ही तो संपादित होते हैं।

गमले के शांत पौधों की तरह आजकल पेड़ काटने वाली आधुनिक आरी भी बड़ी शान्त स्वभाव की आ गई है। पहले शोरगुल से पड़ोसियों को उठा देती थी, मगर आजकल ये आरी हमारे जंगल के जिम्मेदारों की तरह इतनी शालीन है कि रात में किसी की नींद भी नहीं उड़ने देती है और चुपचाप अपना काम करके निकल जाती है। हमारे जिम्मेदार भी बड़े कर्मठ हैं, आरी की तरह बेचारे रातभर जाग कर ओवरटाइम करते हैं, मगर कभी किसी को बताकर वाहवाही नहीं लूटते हैं।

पेड़ कटता है, मगर उसके ठूंठ वहीं रहते है, जिसे देखकर तथाकथित पर्यावरण प्रेमी, झील प्रेमी, पक्षी प्रेमी सहित राजनेताओं को बोलने का मौका मिल जाता है।

ठूंठ और ये लोग चिरस्थाई है, इन्हें भी आरीधारक समाप्त करना चाहता है, मगर इनकी जड़े बड़ी गहरी जानकर चुप रह जाता है। ये सभी चिंतनशील लोग मिलकर एक ज्ञापन तैयार करते हैं, जिसमें बड़े तरीके से प्रकृति के प्रति अपना दर्द लिखा जाता है। यह ज्ञापन जिम्मेदार अधिकारी को दिया जाता है, जिसे देखकर अधिकारी हर बार की तरह चिन्तामग्न होकर इस दर्द में शामिल होता हैं और इस पर कड़ी कार्रवाई का आश्वासन देता है। आरीधारक अपने स्वभाव के अनुसार बड़े ही शालीन तरीके से पेड़ के स्वयं सुसाइड कर सूख जाने पर जनता के कंटकमुक्त राह के लिए काटने का पुख्ता कारण बताता हैं, उनका बस चले तो पेड़ का फर्जी सुसाइड नोट भी पेश कर दें। वहीं अधिकारी जो पेड़ कटने के पूर्व ही सन्तुष्ट हो जाने के बावजूद इस कारण पर एक बार फिर दिखावटी संतुष्ट होते हैं। अब प्रकृति चिन्तक समूह द्वारा पेड़ का यह दर्द लिखित ज्ञापन जिम्मेदारी के साथ अखबारों के दफ़्तर तक भेजा जाता है और दूसरे दिन यह दर्द खबर के रूप अखबार में प्रकाशित होता है। इस खबर में अपना नाम देखकर चिन्तक समूह का दर्द धीरे-धीरे शान्त हो जाता है। फिर कुछ दिनों बाद नया पेड़ कटता है और चिन्तनशील लोग एक ए-फॉर साइज कागज का फिर इस्तेमाल करते हैं। पेड़ कटने के बाद ठूंठ वहीं रह जाते हैं और जिम्मेदार अधिकारी व आरीधारक भी इसी ठूंठ की तरह कभी नहीं बदलते हैं।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

झील किनारे मछली के लिए आटा

सुनील जैन राही
नई दिल्ली, 98109-60285

नौ चौकी झील का किनारा हो, हाथ में हाथ और कंधे पर सर तुम्हारा हो। आंखों में तैरती मछलियां हो। मछलियों को दाना डालते हुए में मन में पानी की हिलोरें हों। यही तो रोज का मंजर है। शाम का समय था। नौ चौकी घाट पर जोड़े बैठे सपनों में खोए, पानी में पैर हिलाते कल के सपने देख रहे थे।

ए सुन-

हां, बोल ना ?

आज लेट कैसे हो गई ?

अरे यार..., मुहल्ले का मंजनू पीछा कर रहा था।

तू कहे तो इसी झील में डुबो दूं ?

उसे झील में डुबो देगा तो मेरा रिचार्ज कौन करवाएगा ?

मैं हूं ना...

तू तो रहने दे, जेब में फूटी कौड़ी नहीं। बाइक भी दूसरे की मांग कर लाता है।

तो क्या हुआ ?

याद है ना, मां ने सब्जी के लिए पैसे दिए थे, उससे पेट्रोल भरवाना पड़ा था।

इतने में दो तीन मछलियां पानी में दिखाई दी। लड़की का मछली प्रेम उमड़ा। लड़का मछली फंसाए बैठा था, इसलिए उसे मछलियां नहीं दिखाई दे रही थी।

लड़की ने कहा- ऐ सुन, जरा इनके लिए आटा
ले के आ ना ?

देख वैसे ही कड़की चल रही है। मैं तो एक मछली को ही नहीं पाल पा रहा हूं, इतनी सारी मछलियों के लिए आटा कैसे लाऊं ?

दोनों सन्नाटे में शाम के झुरमुटे में चुपचाप बैठे मछलियों को तैरते हुए देख रहे थे। गेट के बाहर 70 साल की बुढ़िया आटे की गोलिया बना रही थी।

अक्सर झील के किनारे आने वाले युवा अपने लिए चना जोर गरम और मछलियों के लिए आटा लेकर घाट की अंतिम सीढ़ियों पर बैठ पानी में पैर डाल प्यार की नाव में बैठ झूला करते हैं।

बुढ़िया की थाली में दो किलो आटा मथा हुआ रखा था। आज छुट्टी नहीं थी, बच्चे और मां- बाप भी कम थे। पूरा आटा बचा था। एक शहरी बाबू आया और बुढ़िया को 20 रुपए देकर आटे की गोलियां खरीदता है और फोटो लेने लगता। बुढ़िया फोटो के लिए मना कर देती। वह 50 रुपए देता और फोटो के लिए फिर कहता है।

बुढ़िया को बीमार बुड्ढा याद आ जाता है। वह रुपए ले लेती है। चुनाव में कई नेता पैर छूकर गए थे। बुड्ढे के इलाज का आश्वासन भी दिया था। साथ में आए साहब ने कुछ लिखा भी था।

खैर... खाट पर पड़े बुड्ढे की याद आ गई। बुढ़िया की आंखों से दो आंसू टपक गए। बुढ़िया ने सर नीचे कर लिया।

युवक बोल रहा था। अम्मा ये फोटो कल अखबार में आएगी। तेरी फोटो छपेगी। तेरा नाम होगा। तेरे साथ- साथ मेरा भी नाम होगा। मुझे बेस्ट फोटो अवार्ड (पुरस्कार) मिलेगा। गरीबी दूर करने से नहीं, गरीबी दिखाने से अवार्ड मिलता है।

बुढ़िया के अखबार में छपे फोटो पर दिनभर चर्चा होती रही। बुढ़िया रोज की तरह मछली फंसाने वालों के लिए आटे की गोलियां बना रही थी।

मां मुझको जन्म लेने दो

मां मुझको आज जन्म लेने दो,
खुली हवा में खुलकर जीने दो।
आज भ्रूण हत्या से बचा मुझको,
गर्भ के बाहर मुझको आने दो।।
मैं कल्पना बन अंतरिक्ष को जाऊंगी,
प्रतिभा ताई बन देश को चलाऊंगी।
मत मार मुझे कोख में मां,
मैं पढ़ लिख बापू की पहचान बनाऊंगी।।
भैया संग स्कूल को जाऊंगी,
घर के कामों में हाथ बटाऊंगी।
बाबुल के आंगन में चहकने वाली मैं,
दुल्हन लिबास ओढ़े ससुराल को जाऊंगी।।
दो परिवारों का सम्मान मैं बेटी,
मुझको भी तुम अच्छी शिक्षा देना।
जमाना क्या कहता, परवाह नहीं मुझको,
मुझे तो बस तेरे ममता तले है रहना।।
मत मारो मुझको मां,
दो जीने का अधिकार।
तू भी तो एक बेटी थी,
जन्म दे मुझे कर उपकार।।
मां मुझे आज जन्म लेने दो,
अपने सपने को मुझे छू लेने दो।
चलूंगी तेरे पद चिन्हों पर,
बस! मुझे आज जन्म ले लेने दो।।

अंकुरसिंह
जौनपुर, उत्तरप्रदेश
8367782654, 8792257267

शीत में प्रभात

सर्दी में, सुबह में, हलकी हलकी धूप में,
पेड़- पौधे, डाल- पात चमके प्रभात में,
कोपल में, कलियों में, पुष्पों की पत्तियों में,
ओस बूंदें मोती सी लगती प्रभात में,
हरी- हरी घास के, मखमली सेज पर,
अलसाई जल बूंदें, लगती प्रभात में,
हल्के नीले नभ में, धुंध- धुंध छा रहीं,
मटमेला रंग जैसे, फैला हो प्रभात में,
शीत शिला हो गई, पर्वत-पर्वत खो गए,
पतला महीन पट, डालो हो प्रभात में,
चिड़ियों का मंद स्वरएगुंजता गगन मेंद्य
असाध्य वीणा जैसे कोई साधता प्रभात में,
धीरे- धीरे धूप का, रूप रंग दिख रहा,
रैनभर सो कर, आई हो प्रभात में,
बादलों से तांक- झांक, किरणें यूं कर रहीं,
सुरबाला ने बाल, बिखेर हो प्रभात में,
वाष्प बन ओस बूंद, उड़ चली नभ में,
गोपाल संग गायें, चरने गयीं प्रभात में,

मनीष नंदवाना
चित्रकार
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

मां मुझे आंचल में छिपा लो

मां मुझे अपने आंचल में छिपा ले
मैं जरा सी आहट से डर जाती हूं
यु तो बहुत हौंसला है मुझ मैं
मगर जब भी होती हूं तन्हां
रात के अन्धेरे में अपनी ही
परछाई से सिहर जाती हूं
सफर बहुत तय करना मुझको
क्यूं मैं अपने इन हौसलों को
बात बात पर कम कर जाती हूं
रात हुई तो फिर भोर भी होगी
क्यूं नहीं बात इतनी सी मैं
खुद को समझा पाती हूं
मां तेरे आंचल से बिछड़
कहीं सुकुन ना मिला जहां में
दे छाया आंचल की फिर से
आंचल से लिपटना चाहती हूं

शोभा गोस्वामी, राजसमंद

गजल

दिलों के दर्द को लफ़्ज़ों में ढाल कर लिखना
हरेक बात अदब से संभाल कर लिखना
ग़ज़ल हो, नज़्म हो, अशआर पर गिरह चाहे
रदीफ़. क़ाफ़िये तुम देख भाल कर लिखना
निसाब अपना समझना सुखन की दौलत को
इसे मेयार के सांचें में ढाल कर लिखना
सदाक़तों से मसाफत कभी न तुम रखना
कलम से अपनी हक़ीक़त उछाल कर लिखना
वो इश्क़ हो, कि जुदाई हो या कोई मौजू
तु अपने आपको उसकी मिसाल कर लिखना
रिया, ग़ुरूर, हसद, बुग्ज़ ना जलन रखना
हरेक ख़ार, तु दिल से निकाल कर लिखना
खुशामदी से ये जीवन उरूज़ पर होगा
दिलो-दिमाग से बातें, ये टाल कर लिखना
तिरा ही काम है तारे ज़मीं पे ले आना
जो हो जुनूब की बातें, शुमाल कर लिखना
गुलाब लब को, तो आंखें शराब लिख देना
हसीन शोख़ को, मिस्ले-ग़ज़ाल कर लिखना
ख़याल रख, न हो नाराज़ कोई तुझसे कभी
रक़ीब को भी तु अहलो- अयाल कर लिखना
'हनीफ़' हिर्सो-हवस की तपिश से तु बचना
कि अपने दिल से इसे पाएमाल कर लिखना
बहुत 'हनीफ़' सितारे सुखन के हैं लेकिन
तिरी मिसाल दें, तू वो कमाल कर लिखना

शैख़ मुहम्मद हनीफ़ रिज़्वी
कांकरोली, 98293-15989

कठिन शब्दानुवाद : अशआर = शेर का बहुवचन
गिरह = गिठान, क़ाफ़िये = तुकबंदी वाले शब्द
निसाब = पूंजी, सुखन = शायरी/साहित्य
मेयार = स्टेण्डर्ड, सदाक़त = सच्चाई
मसाफ़त = दूरी, मौजू = विषय, रिया = पाखण्ड,
दिखावा, हसद = ईर्ष्या, खुशामद = चापलूसी
बुग्ज़ = द्वेष, जुनूब = दक्षिण दिशा,
शिमाल = उत्तर दिशा, ग़ज़ाल = जवान हिरणी
रक़ीब = दुश्मन/शत्रु, अहलो-अयाल = परिवार
हिर्सो-हवस = ईर्ष्या और वासना
पाएमाल = पामाल, रौंद देना

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

राजस्थानी केणावतां

गुण रै बिना नाम कस्यो

अर्थात् – मानव का नाम गुण के अनुसार ही होना चाहिए।

ठंठन पाल, मदन गोपाल

अर्थात् – नाम तो मदन गोपाल, जो भगवान का नाम है और कमाई एक रुपए की नहीं है।

नाम मोटा अर दसरण खोटा

अर्थात् – नाम तो भगवानदास और कर्म से कसाई का कार्य करता है। यह तो विपरीत धर्म हो गया। ऐसे आदमी का मुंह देखना भी पाप है।

करमहीण खेती करें, बळद मरे, टोटो पड़े

अर्थात् – जो कर्म नहीं करता है, तो उस किसान की खेती और पशुधन की हानि निश्चित है।

मरद रोवे नाम नै, गुलाम रोवे दाम नै

अर्थात् – सही (सज्जन आदमी) अपने खानदान व नाम की रक्षा करता है और बदंगी करने वाला दास सिर्फ तनख्वाह की चाह रखता है।

ठंठनपाल री बहू

गाम में एक आदमी रौ नाम ठंठनपाल हो। आस पड़ौस री लुगाया, वणी री बहू नै ओ ठंठनपालजी री लाडी सम्बोधन करीनै बुलावती। कोई मनचली बैफरबानी अणी सम्बोधन पै मुंडो मसोस कर हंस पड़ती, तो ठंठनपाल री बहू रै काळजे माथे सांप सरक जातो, पण वा आपरा पति रा ईं अटपटा नाम पै किनेई कांई नी कै सकती। एक दन आपरी सासु रै कने जाय र बोली– सासुजी आप म्हारा पति देव रौ नाम कणी पंडत रै कनै जाय र बदला आवो। सासुजी कह्यो– बहू नाम काई धर्‌यो है। म्हारो बेटो कमाई करवा में गाम रा सेठां सुं आगे है। ईं तरियां बहू नै समझा बुझा नै चुप कर देती, पण उण रा मन में नाम री टीस कम नी वी। ठंठनपाल रै मकान रै कनै अमरचंद नाम रो डोकरो रामचरण वेई ग्यो। लोग बाग बैठवा आया, तो ठंठनपाल री लुगाई नै उण दिन ठा पड़ी कै अमरा बा मरी सकै, या बात जंचे कोनी। दूजे दिन आंपरा खैते जाता लछमी पड़ौसन नै छाणा बीणती देखी अर पूनम रै दिन धनगर नामक पंडत नै भीख मांगतो दिख्यो तो उण रै मन में एक विचार आयो कै अणी लछमी रै कांई कमी, जो छापरड़ा में छाणे बीणे। अर धनगर पंडत रै कांई धन री कमी, जो भीख मांगतो फरे। अमरा बा ने तो अमर वेणो चावे, वै कस्यान मरी ग्या। सोचता– सोचता वीनै समझ में या बात आई कै–

‘अमर मरन्ता म्हैं सुण्यो, धनगर मागे भीख,
लछमी छाणा बीणती, म्हारो ठंठनपाल ही ठीक।’

फतहलाल गुर्जर ‘अनोखा’
वरिष्ठ साहित्यकार
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

कोरोना और किसान आंदोलन

कोरोना के लिए एक लंबी जंग अभी विश्व को लड़ना होगा। क्योंकि 7 अरब की विश्व जनसंख्या की तुलना में 6 अरब लोगों के लिए ही टीके भारी भरकम राशि के बदले उपलब्ध होने की संभावना है। अभी भी कई देश अपने लिए कोरोना के टीकों का आरक्षण नहीं करा पाए। इसलिए सावधानी, स्वास्थ्य, सुरक्षा, योग और ध्यान की हर व्यक्ति को आवश्यकता है।

कृषि बिलों को लेकर किसान आंदोलन जारी है। सिंधु बॉर्डर, गाजी बॉर्डर, टिकरी बॉर्डर, वल्लभगढ़ आदि जगहों पर किसानों का भारी जमावड़ा है। फलस्वरूप, नेशनल हाइवे 24, 44 और 9 पूरी तरह से बंद हैं। दिल्ली पहुंचना और बाहर निकलना अभी तो मुमकिन नहीं है। इधर केंद्र सरकार और किसान संगठनों के मध्य तीसरी और महत्त्वपूर्ण बैठक 6 दिसंबर को भी बेनीजा रही। फिर भारत बंद का ऐलान कर दिया। इसका मतलब साफ है। अभी इस आंदोलन को लम्बा चलना है।

इस आन्दोलन के प्रदर्शनों ने किसानों की चिंता को दिखाया है। किसान कृषि उत्पादों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP-Minimum support price) न मिलने और कृषि उपज विपणन समिति (APMC- Agricultural product market committee) के ना होने से पूंजीपतियों के द्वारा संभावित शोषण होने की संभावना के चलते तीनों कृषि बिलों को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। सरकारों को राजनीतिक हितों को छोड़ देश और समाज के हितों पर गंभीरता पूर्वक सोचना होगा।

इधर कोरोना के चलते किसान आन्दोलन प्रभावित हो रहा है। कई किसान कोरोना की जद में आ गए हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है। पंजाब से डॉक्टर पहुंच गए हैं। सिंधु, गाजी और टिकरी बॉर्डर के साथ वल्लभगढ़ क्षेत्र के पास कोरोना को लेकर डॉक्टरों की चिंता हिला देने वाली है। दूसरी तरफ देश- विरोधी ताकतें भी मौका भुनाने में लगी हुई है। ऐसे हालतों में भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि देश को बचाए रखें।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद्
राजसमंद

कृषि विधेयक उचित या अनुचित?

जिस देश का अन्नदाता किसान कुदाल और बैल लेकर खेतों में जाने के बजाय सड़को पर उतर जाए, उस देश के लिए इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगी। देश के जीडीपी में 16.18 प्रतिशत तक का योगदान देने वाले किसानों की संख्या 2014-15 रिपोर्ट के अनुसार देश की जनसंख्या का 67.8 प्रतिशत है। इस आधार पर कहा जाता है, इस देश का एक बड़ा तबका आज खेत- खलिहानो पर निर्भर हैं और इनके हित को किसी भी तरीके से नजर अंदाज़ नहीं किया जा सकता हैं ।

वर्तमान में भारत सरकार ने कृषि से संबंधित तीन अध्यादेश लागू करने जा रही है, जिसे सरकार, उनके सहयोगी घटक और कुछ सामाजिक/ कृषि संगठन किसानों के हित में बता रहे है, वही विरोधी दलों, अन्य कृषि संगठनों के साथ साथ अब सरकार का एक घटक अकाली दल भी विधेयक के विरोध में आ चुका है।

सरकार का पहला विधेयक हैं, कृषि उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक 2020, इसमें किसानों को अपनी फसल व्यापारियों को मंडी के बाहर फसल बेचने की आज़ादी होगी। इससे राज्य के अंदर एक जिले से दूसरे जिले और राज्यों के बाहर एक राज्य से दूसरे राज्य में व्यापार को बढ़ावा मिलेगा, जो की स्वागत योग्य भी हैं। लेकिन यहां ये सोचने की बात हैं कि देश का 86 प्रतिशत किसान लघु और मध्यम वर्ग की श्रेणी में आते हैं, जिनके पास 5 एकड़ से भी कम खेती योग्य ज़मीन हैं और इनमें से अधिकतर किसान अपनी फसल मंडी ना ले जाकर आस पास के व्यापारियों को बेचता हैं। वर्ष 2003 के एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केटिंग (रेगुलेशन) एक्ट के तहत सरकार किसानों को बाध्य भी नहीं कर सकती कि वह अपनी फसल मंडी में ही बेचे। इस आधार पर कह सकते हैं कि बाजार की आज़ादी, तब भी थी, लेकिन सीमित क्षेत्र में अब ये क्षेत्र पूरी तरह खुला हो गया हैं और ई- ट्रेडिंग का सुलभ विकल्प भी मिल गया इस विधेयक से।

लेकिन तब किसानों के फसल का न्यूनतम फसल मूल्य (एमएसपी) था जो नए नियम में मंडी के बाहर अनाज उत्पादन में नहीं हैं, जबकि देश के कृषि मंत्री और प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं कि मंडी में पूर्व की भांति सरकारी ख़रीदे चलती रहेगी और उस पर एमएसपी रहेगी। मंडी के बाहर एमसपी ना होना कहीं न कहीं किसानों के हित में नहीं हैं। यदि मंडी के बाहर के खरीद पर भी एमएसपी का प्रावधान हो और एमएसपी के नीचे ख़रीददारी जुर्म हो, तो ये विधेयक काफी क्रांति लाने वाला होगा। क्योंकि बाजार में प्रतिस्पर्द्धा आएगी और किसानों के पास ज्यादा विकल्प होंगे, अपनी उपज बेचने के लिए।

आरबीई के 2018 के एक सर्वे के अनुसार 50 प्रतिशत से ज्यादा किसानों ने न्यूनतम फसल मूल्य (एमएसपी) को अपने हित में बताया था, फिर भी सरकार नए बिल में एमसपी क्यों नहीं जोड़ रही, ये समझ के बाहर की बात है। एमएसपी का निर्धारण तमिलनाडु में जन्मे और पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित प्रो. एमएस स्वामीनाथन कमेटी के रिपोर्ट के आधार पर कुल लागत (कुल खर्च पारिवारिक मजदूरी) का 1.5 गुना होना चाहिए।

दूसरा विधेयक, कृषक (सशक्तिकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक 2020, जिसमें व्यापारी या कम्पनियां बुवाई से पूर्व किसानों से एक अनुबंध करेंगी कि आप इस फसल की बुवाई करो और हम फलां तारीख को फलां कुंटल अनाज अमुक मूल्य पर आपसे खरीदेंगे, जो निस्संदेह काफी अच्छा बिल हैं, किसान के फसल का मूल्य बुवाई के पूर्व निर्धारण हो जाएगा, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती हैं, लेकिन इसके साथ इसमें कुछ ख़ामियां भी हैं। क्योंकि अपने देश के आधे से ज्यादा किसानों के पास खेती का पर्याप्त खेत नहीं हैं, वो बड़े किसानों के खेत अधिया, तीसरी या बटाई पर लेकर खेती करते हैं और अनुबंध खेती प्रणाली आने पर व्यापारी या कम्पनियां सीधे खेत के मालिकों से अनुबंध करेंगी, जिससे ये अधिया, तीसरी या बटाई पर खेती करने वाले किसान बस नाममात्र का किसान कहलाएगा, जबकि सरकारी आकड़ों में उनकी गिनती देश के किसानों में होती रहेगी।

दूसरे अनुबंध खेती प्रणाली से एक फायदा यह है कि अनुबंध होने से व्यापक स्तर पर उस फसल पर खेती होगी, जिसके लिए श्रमिकों की जरुरत होगी और स्थानीय लघु किसानों के लिए रोज़गार का भी सृजन होगा, लेकिन जो लघु किसान कल तक अन्नदाता भगवान के नाम से जाना जाता था, अब वो राष्ट्र निर्माता मज़दूर कहलाएगा।

एक प्रमुख ख़ामी यह भी स्पष्ट दिख रही कि किसी विवाद की स्थिति में किसान और अनुबंध करने वाला व्यापारी उप प्रभागीय न्यायाधीश (एसडीएम) के यहां अपील करेगा और 30 दिनों में निस्तारण न होने पर ज़िला न्यायाधीश (डीएम) के यहां मामला जाएगा और डीएम मामले का निस्तारण करेंगे। अपने देश में भ्रष्टाचार कितना चरम पर हैं, किसी से छुपा नहीं हैं। ये (भ्रष्टाचार अनुभव सूचकांक 2019 में भारत का दुनिया के 180 देशों में 80वां स्थान पर है) तो यहां भी सम्भावना है कि आर्थिक रूप से मजबूत व्यापारी या कंपनी इन प्रशासनिक अधिकारियों पर येन केन प्रकारेण दबाव डालेगा, निर्णय को अपने पक्ष में करने के लिए। यदि ऐसा हुआ तो दूसरों का पेट भरने वाला, आधा तन ढककर खेतों में हल चलाने वाला किसान अपने हक़ की लड़ाई कैसे जितेगा? सरकार को चाहिए कि इसमें आगे के कोर्ट की व्यवस्था भी बनाएं, ताकि इन मनोनीत अधिकारियों से न्याय न मिलने पर किसान के साथ- साथ व्यापारी को भी ऊपर की अदालत में अपनी बात कहने का हक़ हों, क्योंकि आज भी देश का आम नागरिक कार्यपालिका में उतना विश्वास नहीं रखता, जितना की न्यायपालिका में।

इस कड़ी का तीसरा अध्यादेश है आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक- 2020। इस अध्यादेश में सरकार ने अब खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू जैसे कृषि उत्पादों पर से स्टॉक लिमिट हटा दी गई हैं। राष्ट्रीय आपदा, सूखा, महामारी युद्ध जैसी स्थितियों में स्टॉक लिमिट लगाई जाएगी। इससे एक फायदा तो हैं कि किसानों की उपज अब बेकार होकर फेंकी नहीं जाएगी, लेकिन बाकी बिल की तरह यहां भी कालाबाजारी जैसी कुछ और ख़ामियां दिख रही हैं। क्योंकि जब फसल के उत्पादन का समय होता है, तो ज्यादा उपलब्धता के कारण बाजार में आसानी से कम रेट में फसल मिलती है। जब इन खाद्य वस्तुओं से स्टॉक लिमिट हट जाएगी, तो बड़े- बड़े व्यापारी, कंपनी फसल उत्पादन के समय किसानों से कम रेट में ज्यादा माल खरीद कर इन्हें जमा कर लेंगे और बाजार में इनके मांग पर पूर्ति ना करके इनकी उपलब्धता की कमी दिखाते हुए उच्च दामों में इन वस्तु को बेचेंगे, जिससे इस संरचना में सबसे आखिरी कड़ी कहा जाने वाला उपभोक्ता प्रभावित होगा, जिसे महंगे दामों पर इन दैनिक खाद्य वस्तुओं को खरीदनी पड़ेगी और महंगाई में बेजोड़ बढ़ोत्तरी होगी। इसका उदाहरण देश में बीच- बीच में प्याज की आसमान छूते भाव में देखने को मिले है कि कैसे इसका भण्डारण कर कीमतों की कालाबाजारी किया जाता रहा हैं और खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू तो हर घर में प्रयोग किया जाता है। इस आधार पर कह सकते हैं कि आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक- 2020 से किसान ही नहीं, आम जनमानस भी परेशान होगा।

आखिरी सवाल जेहन में ये उठता हैं कि सरकार को इतनी जल्दी क्या थी, जो ये संशोधन को लोकसभा के बजाय अध्यादेश (भारतीय संसद के द्वारा नए क़ानूनों का निर्माण, पुराने क़ानूनों में संशोधन किया जाता है। लेकिन जब संसद का सत्र न चल रहा हो, तो भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रीमण्डल की सिफारिश पर भारत का राष्ट्रपति जिन क़ानूनों को लागू करता है, वह अध्यादेश कहलाता है और अध्यादेश संसद की कार्यवाही पुन: शुरू होने पर दोनों सदनों में न्यूनतम छह सप्ताह और अधिकतम छह माह के समय सीमा में पारित करना आवश्यक होता है। यदि दोनों ही सदन इसे खारिज करने के पक्ष में मतदान करते हैं, तो ये अध्यादेश समाप्त हो जाता है। सरकार किसानों के बीच एक सर्वे कराकर लोकसभा से भी ये विधेयक ला सकती थी। सरकार क्या सच में, किसानों के हित के लिए ज्यादा उतावली थी या फिर पूंजीपतियों के दबाव में उन्हें फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से इस महामारी में मौके पर चौका मरना चाहती थी। आज अकाली दल हरियाणा और पंजाब के किसानों का मूड देखते हुए सरकार से बगावती तेवर अपनाई हुई हैं, उस समय क्यों चुप थी, जब कैबिनेट मीटिंग करके ये अध्यादेश लाया जा रहा था। इसे खाने के लिए अन्न उपजाने वाले बेबस किसानों के साथ सियासत की राजनीति करना ना कहे तो और क्या कहे ?

खैर ये तो आने वाला भविष्य ही बताएगा कि इस अध्यादेश का परिणाम कैसा आएगा, क्योंकि इस तरह के कानून का परिणाम तुरंत नहीं अपितु कुछ सालों के बाद दिखाई पड़ता है।

अंकुरसिंह
चंदवक, जौनपुर (उत्तरप्रदेश)
मो. 8367782654, 8792257267

सावधान! इस अंधी गली में आगे ख़तरनाक मोड़ है

शायद बहुत कम लोग हैं जिनको आज़ादी की जंग के इतिहास से पहले विदेशीराज की इतिहास की नजरों ने वो मंज़र भी देखा है, दो सौ साल तक की गुलामी की दास्तां मालूम होगी। देश आज फिर से करीब तीन सौ साल पुराने हालात के ख़तरनाक मोड़ पर खड़ा लग रहा है। फर्क तब राजशाही थी, बाप दादा की विरासत में गद्दी मिलती थी और सिंहासन मिलते कोई मालिक बन जाता था और राज्य की जनता उसकी गुलाम, जिसे शासक के आदेश का पालन करना होता था और उसके जुल्म, उसके फैसले सर झुकाकर मानने पड़ते थे। क्योंकि उन में से बहुत शासक वास्तव में काबिल नहीं होते थे, इसलिए विदेशी चालाक शासक उनको आसानी से अपनी चालों का शिकार बना लिया करते थे और हिंदुस्तान जो कुदरती संपदा का भंडार था और सोने की चिड़िया कहलाता था, उनके हाथ की कठपुतली बनकर खुद लुटने को तैयार हो गया था। आपने ईस्ट इंडिया कंपनी नाम अवश्य सुना होगा, जो मेहमान बनकर कारोबार करने आए थे और उसके बाद धीरे धीरे एक एक करके राजाओं, जागीरदारों को अपने बिछाए जाल में फंसाते गए और हमारे देश के वास्तविक राजाओं को बेबस और बेचारे बनाकर उनके नाम पर सत्ता का मनमाना इस्तेमाल करते रहे। अफ़सोस है कि हमने लगान फिल्म को देखा है, मगर मनोरंजन की नज़र से या अभी रानी पद्मावती पर बनी फिल्मों को देखते समय इतिहास की सच्चाई को समझने की जगह इक सिरफिरे आशिक़ की नाकाम इश्क़ की कहानी से अधिक कुछ नहीं समझा।

शायर मुज़फ़्फ़र रज़्मी ने कहा है 'ये ज़ब्र भी देखा है तारीख़ की नज़रों ने, लम्हों ने ख़ता की थी, सदियों ने सज़ा पाई'। लगता है कुछ उसी तरह का और शायद उससे बढ़कर आज हो रहा है। देश उनकी बाप दादा की विरासत नहीं है, आज़ादी हासिल करने को सौ साल तक लड़कर कितनी कुर्बानियां देकर जंग लड़नी पड़ी है। ये उनको नहीं समझ आएगा, जिन्होंने या जिनके पुरखों ने गुलामी को आज़ादी से बेहतर समझा था और जो आज़ादी के लिए लड़ते थे उनकी मुखबिरी और जासूसी किया करते थे। जिनको कुछ लोग महान घोषित करते हैं, उन्होंने विदेशी शासकों के सामने सर झुकाकर लिखित माफीनामे दिए थे। इतना ही नहीं उन्होंने आज़ादी का और देश के तिरंगे का भी आदर तब तक करना जरूरी नहीं समझा था, जब तक उनकी विचारधारा के राजनेता सत्ता पर बैठ नहीं गए थे। मगर हमारी सभ्यता और परंपरा बड़ी बड़ी गलतियों को भाईचारे और एकता की खातिर माफ़ कर देने की रही है। अन्यथा जो देश के संविधान की धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत की बात स्वीकार नहीं करते, उनको देश की राजनीति में जगह मिलनी कठिन थी।

आज ये सब दोहराने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि जो ज़ख्म मिले थे अपने ही देशवासिओं के दिए भरने के बाद कुरेदना पीड़ादायक है। लेकिन इतिहास को दोबारा उसी गुलामी की राह पर जाते नहीं देखा जा सकता है। आपको क्या लगता है सरकार सब कुछ ख़ास धनवान लोगों को देने या बेचने अथवा लंबी अवधि तक किराए या पट्टे पर देकर देश को कुछ लोगों के पास बंधक बनाकर अच्छा काम कर रही है। लेकिन सरकारी संस्थान और सम्पति पर अधिकार पाकर भी उनका इरादा देश की सबसे बड़ी संपदा ज़मीन को हथियाना साफ नज़र आने लगा है। ये देश कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था है और तीन चौथाई जनता खेती मज़दूरी जैसे कार्यों से जीवन यापन करती है। जैसा डर लग रहा है सरकार कृषि को

मुनाफाखोर लोगों के हाथ जाने देना चाहती है। किसान की आवाज़ को अनसुना कर अथवा बहला फुसलाकर कोई झुनझुना देकर समझौते के नाम पर तब सिर्फ किसान बर्बाद होंगे, ये मत समझना हमारी आपकी सबकी बारी आएगी ये तय है। पर क्या टॉलस्टॉय की कहानी हाउ मच लैंड, मैन नीड्स की तरह उनकी लालच की कोई सीमा नहीं है और इसके आगे जो हो सकता है, उसकी कल्पना लगता है सत्ताधारी राजनेताओं को अभी नहीं है।

चलो आपको आगे ले चलते हैं। दस बीस तीस साल बाद मैं नहीं रहूंगा, कुछ और भी हममें नहीं देख सकेंगे, मगर जिस दिशा को राजनीति आगे बढ़ रही है अंदेशा यही है। अधिकांश ज़मीन के मालिक बेशक नहीं बने होंगे, मगर खेती किसानी और खाने पीने की सभी वस्तुओं अनाज के भंडार कुछ अमीर धनवान लोगों के पास उनकी मलकियत होंगे। उसके बाद किसान से गुलाम बंधुआ मज़दूर की तरह विवश होकर काम के बाद उनकी नज़र देश को अपने कब्ज़े में लेना हो सकता है। उनकी कठपुतली बनकर लोग चुनाव लड़ेंगें, जीतेंगे और संसद विधानसभाओं में बैठकर सरकार बनाएंगे चलाएंगे। जिस तरह अमरीका में निर्वाचित लोग लॉबी बनकर कानून के समर्थन या विरोध करने तक ही बात नहीं है, बल्कि सर्वोच्च अदालत के न्यायधीश तक किसी राजनैतिक दल के हित को देखकर फैसले करते हैं। ये अच्छा है कि वहां लोग शिक्षित हैं और मुखर होकर विरोध करते हैं। साथ ही वहां का मीडिया निडर और निष्पक्ष है, इसलिए बेशर्मी से कुछ भी करना उतना सहज नहीं है। मगर भारत जैसे देश में पुलिस आज भी न्याय व्यवस्था कायम रखने का कर्तव्य छोड़कर अपने देश के नागरिकों का दमन करती है, शांतिपूर्वक विरोध करने नहीं देती है।

चिंता इस बात की है कि आज कोई लोकनायक जयप्रकाश नारायण तानशाही के खिलाफ़ खड़ा नहीं है और कोई दूसरा महात्मा गांधी फिर नहीं मिलेगा, देश को आज़ाद करवाने को। आज जो सत्ता पर विराजमान हैं, वो जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काटने का काम कर रहे हैं। सिर्फ किसान की जमीन की नहीं, हमारे पांव के नीचे भी जमीन नहीं बचेगी सावधान। समझ रहे हैं हम जिस सुरंग से गुज़रने वाले हैं, वो मंज़िल तक पहुंचने का छोटा और आसान रास्ता है, मगर वास्तव में हम ऐसी अंधी गली में जा रहे हैं, जो कहीं उजाले की तरफनहीं निकलेगी, बल्कि एक खाई में लेजाकर ख़त्म करेगी। ये किसी राक्षस की मायाजाल की जैसी कथाओं की बात है।

डॉ. लोक सेतिया
व्यंग्यकार, मॉडल फतेहाबाद
हरियाणा, मो. 94167-92330

समसामयिक प्रश्नोत्तरी

परितोष पालीवाल
82338 82818

1. हाल ही में वनडे मैचों में सर्वाधिक तेज गति से 12 हज़ार रन बनाने के सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड को तोड़ने वाले खिलाड़ी कौन हैं ?
2. मसाला किंग के नाम से मशहूर महाशय धर्मपाल गुलाटी जिनका हाल ही में निधन हुआ है, भारत की किस कंपनी से संबंधित थे ?
3. ऑनलाइन गेमिंग को प्रतिबंधित करने वाला बिल हाल ही में किस राज्य की विधानसभा ने पारित किया है ?
4. 4-5 दिसंबर 2020 को किस देश के साथ भारतीय नौसेना ने PASSEX अभ्यास का आयोजन किया।
5. सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (SII) के द्वारा विकसित कोरोना वैक्सीन का क्या नाम है ?
6. कौनसी फार्मास्युटिकल कम्पनी भारत में रूस के स्पुतनिक V कोविड 19 वैक्सीन की खुराक का निर्माण करेगी ?
7. सरकारी आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2020- 21 की दूसरी तिमाही (जुलाई से सितंबर) में भारतीय अर्थव्यवस्था में कितने प्रतिशत गिरावट हुई ?
8. कैंब्रिज डिक्शनरी में सबसे ज्यादा तलाश किये जाने वाले शब्द के तौर पर किस शब्द को वर्ड ऑफद ईयर 2020 चुना गया है ?
9. भारत सरकार की MSME के क्षेत्र में रोज़गार के जितने अवसर पैदा करने की है, योजना है ?
10. माइक्रोसॉफ्ट इमैजिन कप 2021 के भारत संस्करण के लिए किस भारतीय निकाय ने साझेदारी की है। इमैजिन कप एक वार्षिक इनोवेशन चैलेंज है, जो माइक्रोसॉफ्ट द्वारा छात्रों और प्रौद्योगिकी के प्रति उत्साही लोगों के लिए आयोजित किया जाता है।
11. आरबीआई की दिसंबर 2020 की मौद्रिक नीति समिति की बैठक के बाद नई रेपो दर क्या है ?
12. महाराष्ट्र के सोलापुर के एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक जिन्होंने वैश्विक शिक्षक पुरस्कार जो वर्की फाउंडेशन द्वारा प्रदान किया जाता है, को जीता है।
13. हाल ही में किस राजनीतिज्ञ ने अपना पद्म विभूषण अवार्ड किसान आंदोलन के समर्थन में लौट आया है ?
14. हाल ही में राजसमंद जिले की किस कद्दावर नेता का कोरोना संक्रमण से निधन हुआ है ?
15. हाल ही में किस बहुचर्चित और विवादित अर्जेन्टीना के फुटबॉलर की मृत्यु हो गई है ?

उत्तरमाला

(1) विराट कोहली (2) एमडीएच (3) आंध्रप्रदेश (4) रूस (5) कोविड शील्ड (6) हेटेरो (हर साल की 100 मिलियन से अधिक) (7) 7.5 प्रतिशत तक (8) क्वारंटाइन (9) 5 करोड़ रोजगार के अवसर (10) माइक्रोसॉफ्ट इंडिया और नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (NSDC)ने (11) 4.0 प्रतिशत (12) रणजीतसिंह डिसाले ने (13) प्रकाश सिंह बादल ने (14) किरण माहेश्वरी (15) डियागो मैराडोना

स्वयंवर बनाम साझा संकलन

जिस प्रकार गिरगिट में डायनासौर का प्रतीकात्मक अवशेष आंशिक रूप से देखने को मिल जाता है, उसी तरह यदि आप मेरी नजरों से देखिए तो स्वयंवर का अवशेष साहित्य के साझा संकलन के रूप में आपको दिख जाएगा।

भले ही वर्तमान में स्वयंवर का प्रचलन लुप्त हो चुका है, किन्तु स्वयंवर का प्रतिस्थानी 'साझा संकलन' का चलन परवान पर है। काफी हद तक दोनों में समरूपता दिख जाएगी। चलिए जलेबी की तरह गोल गोल घूमाने की बजाय मैं ही इस विषय पर लालटेन डालता हूं।

जिस प्रकार पौराणिक काल- कथाओं में मुनादी करवाकर स्वयंवर आयोजित किया जाता था, उसी प्रकार आधुनिक काल में सोशल मीडिया पर साझा संकलन की घोषणा की जाती है। स्वयंवर का आम जनता से कोई सारोकार नहीं होता था, उसी प्रकार साझा संकलन में आम लेखक या पाठकों की कोई सहभागिता नहीं होती।

स्वयंवर में सिर्फ़ तात्कालीन वीआईपी या आर्थिक रूप से संपन्न राजा, राजकुमार ही शामिल होते थे, उसी प्रकार साझा संकलन में आर्थिक संपन्न (सहयोग राशि प्रदत्त) साहित्यकार ही भाग लेते हैं। स्वयंवर सीमित राजाओं के साथ संपन्न होने वाला धार्मिक अनुष्ठान था, तो साझा संकलन सीमित लेखकों के साथ संपन्न होने वाला साहित्यिक अनुष्ठान है।

स्वयंवर में सीमित लोगों के लिए भोज मनोरंजन का प्रावधान था, तो साझा संकलन भी सीमित प्रति (दूसरे शब्दों में लेखकीय प्रति) प्रकाशन वाली योजना है। स्वयंवर में विवाहाकांक्षी किसी भी काना, लूला, प्रौढ़, युवा, सुंदर, कुरूप, दर्जनों पत्नी का पति, सैकड़ों बच्चों का पिता, मित्र- शत्रु आदि प्रतिभागी को शामिल होने का अधिकार होता था, बशर्ते कि वो किसी रियासत और रजवाड़ा से संबंधित हो अर्थात आयोजन में योग्यता की बजाय आर्थिक औकात को तवज्जो दिया जाता था, ठीक उसी प्रकार झाड़-पतवार लिखने वाला कोई भी छपास पीड़ित नौसिक्खाड़, वयोवृद्ध या साहित्य का दुश्मन संकलन में शामिल हो सकता है, बशर्ते निर्धारित पेज राशि को चुकाने का माद्दा रखता हो।

स्वयंवर में वधू पक्ष चिंतित तथा सहभागी राजकुमार उत्साहित दिखता था, उसी प्रकार साझा संकलन में प्रकाशन चिंतित, तो सहयोग राशि भुगतेय सहभागी लेखक उत्साहित नजर आते हैं। बहरहाल स्वयंवर में संबंधित राजन का उद्धार होता था, तो साझा संकलन में संबंधित प्रकाशन का।

विनोद कुमार 'विक्की'
हास्य व्यंग्यकार
बिहार

पुरुषोत्तम शाकद्वीपी को साहित्य साधना सम्मान

अखिल भारतीय सृजन सरिता परिषद, हिमाचल प्रदेश एवं निखिल प्रकाशन समूह आगरा द्वारा कवि एवं साहित्यकार पुरुषोत्तम शाकद्वीपी को अनन्त आकांक्षाओं का आकाश काव्य संग्रह में प्रकाशित रचनाओं के लिए 'साहित्य साधना सम्मान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा लिखी गई कविताएं, कहानियां व लेख देश की पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं तथा आकाशवाणी के उदयपुर केन्द्र से इनकी कहानियों का प्रसारण होता रहता है।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

'राज प्रशस्ति' महाकाव्य
तैलंग पं. रणछोड़ भट्ट का अनुपम शिला शब्द शिल्प

जलदर्पण में निहारता संगमरमरी शब्द सौन्दर्य

बीसवां सर्ग

'राज प्रशस्ति' की इक्कीसवीं शिला पर अंकित बीसवें सर्ग के अवलोकन से मेवाड़ वंश के राजन्य वर्ग के सामाजिक और राजनीतिक सौहार्द्र सहित परस्पर व्यवहार द्वारा संतुलित कूटनीतिक संबंधों के प्रति उनकी जागरूकता का बोध होता है। राजसमुद्र जैसी विशाल जन संवेदनाओं से जुड़ी प्रायोजना के प्रतिष्ठा समारोह के साथ राणा राजसिंह ने आगत राजा महाराजाओं की उपहारों से जो आभार अभिव्यक्ति की, वह उनके सामाजिक व्यक्तित्व का परिचायक है।

इस समारोह में उपस्थित विविध जनपदों यथा- जोधपुर, आमेर, बीकानेर, बूंदी, रामपुरा, जैसलमेर, डूंगरपुर, बांधवगढ़ (रीवां) टोड़ा आदि के शासकों को विशेष प्रकार के बहुमूल्य तोहफे भिजवाए गए, जिनका सविस्तार वर्णन इस सर्ग में अंकित है।

संतुलित सामाजिक व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए राणा ने आगत चारण, विरुद्ध गायकों एवं अतिथियों का जैसा सम्मान किया, वह सविस्तार पठन योग्य है। कारीगरों, शिल्पकारों और निर्माण प्रक्रिया में लगे समस्त कार्यों का निरीक्षण, निर्देश करने वालों को भी मान दिया गया।

'सिरनागं कृतमूल्यं सप्त सहस्त्रैस्तु रूप्यमुद्राणाम।।29।।
द्विपमम्बराणि स ददौ राणावत रामसिंहाय।।30।।

''अग्रगण्याय'' कहकर रामसिंह राणावत जैसे कार्मिकों को दिए गए सम्मान राणा की सदाशयता का परिचायक हैं।

इक्कीसवां सर्ग

''लग्नं राजसमुद्रे तु
यावत्तावद्धन बुधरू।
तरंगगणनां कुर्याद्य-
द्यस्यैव तदाचरेत।।24।।
स्पर्द्धा लक्ष्म्या सरस्वस्त्या
लग्ना लक्ष्मी तु यावती।
न वक्ति तावतीं युक्तं
तडागेत्र सरस्वती।।25।।

रणछोड़ भट्ट के अनुसार, इस समारोह में व्यय राशि की गणना तो वही कर सकता है, जो प्रबुद्ध राजसमुद्र की लहरों की गणना कर सकता हो। अन्यथा तो सरस्वती (वाणी) भी इस अकूत लक्ष्मी (धन राशि) का ब्यौरा दे पाने में असमर्थ है। बाइसवीं शिला पर अंकित इक्कीसवां सर्ग राणा राजसिंह की शासकीय पारदर्शिता, वैधता और विश्वसनीयता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यह राणा के लोकतंत्र के प्रति उनके सम्मान का परिचायक है, जो अधीनस्थों और दानदाताओं द्वारा लोक कल्याण हेतु प्रदत्त धनराशि के उपयोग बाद उसके आय व्यय विवरण के प्रति प्रतिबद्ध है। इस शिला को आज के संदर्भ में 'सूचना के अधिकार' का स्वविवेक से जनहित में सम्मान करते हुए आय- व्यय विवरण (अथवा प्रथम पक्ष, द्वितीय पक्ष विवरण) की प्रस्तुति के रूप में देखा जाना चाहिए।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

आदर्श दम्पति : खुद कुछ भी नहीं, पर बेटे-बेटियों को दिलाई उच्च शिक्षा

सन् 1965-66 का समय और रोज़ शाम को 4- 4.30 बजे मैं श्री फतहलालजी गुर्जर 'अनोखा', दुर्गाशंकर 'मधु' श्री रतनलाल बोल्या, सोहनप्रकाश भीम आदि आदरणीय गुरूजी छन्नुलालजी, राधारमणजी पालीवाल, सालिगराम जी वकील साहब के पीछे पीछे घूमने निकल जाया करते थे। गुरूजी छन्नुलालजी भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रानन्दन पंथ, कवि निराला और अनेक साहित्यिक व्यक्तियों के बारे में चर्चा करते थे, तो राधारमणजी पालीवाल चर्चील, स्टालिन, मुसोलिन और हिटलर के बारे में बताया करते और ऐसे गंभीर विषयों के बीच सालगरामजी वकील साहब अपनी शेरो-शायरी से वातावरण को हल्का- फुल्का बना सभी को गुदगुदा देते थे। तब से लेकर आज तक रोज शाम को घूमने का सिलसिला आज भी श्री अनोखा जी और अन्य मित्र गुरूजी छन्नुलाल जी की याद में अदब की छतरी मित्र मण्डल के नाम से आज भी बदस्तुर चलाए हुए हैं।

एक दिवस में राजसमंद की पाल पर घुमता घुमता श्री दुर्गाशंकर यादव 'मधु' के घर मधु सदन पहुंच गया, उनके कमरे में लगे एक दम्पति के चित्र को देख जिज्ञासावश कह उठा, ये आपके माता-पिताजी की तस्वीर है, उन्होंने एक डबडबाई नजर उस तस्वीर पर डाली और बोले हां ये हम सब भाईयों और बहनों का जीवन बनाने वाले कर्मशील व्यक्तित्व की ही तस्वीर है, जिन्हें हम श्रद्धा से आज भी पूजते हैं और इनके कठिन परिश्रम के बल पर पाई विद्या से अपना जीवन सफल बनाए हुए हैं। भाई अफ़ज़लजी मेरे दादाजी श्री गोकुलजी व दादीजी श्री गोवली बाई भी कर्मठ व मेहनती थे। मेरे दादाजी के पास गोल टाटे वाली एक बैलगाड़ी थी, जिसमें वो द्वारकाधीश मन्दिर की सेवा के लिए गेहूं, शक्कर, मूंग, चावल, घी के डिब्बे लाया व ले जाया करते थे । बैलगाड़ी सूरजपोल के बाहर एक घने वट वृक्ष के नीचे प्याऊ के पास कुछ कुमावत भाईयों की बैलगाड़ियों के साथ छुटा करती थी, दादाजी के दिवंगत होने के बाद मेरे पिता श्री देवीलालजी व काकाजी श्री दौलतरामजी ने शिल्पकारी का काम प्रारंभ किया। शिक्षा के नाम पर उनके पास अक्षर ज्ञान के अलावा कुछ भी नहीं था। साधारण ज्ञान होने के बावजूद भी वे अपनी सुझबुझ से किसी नए भवन का कार्य प्रारम्भ करते, तो ऊंगलियों से हिसाब लगाकर दो मंजिला मकान में नाल की कितनी सीड़ियां लगेगी, बता दिया करते। यह ज्यामीति रेखा गणित का कार्य श्री देवीलालजी ने अपने ममेरे भाई श्री राधाकिशनजी के साथ वास्तुकला की एक पुस्तक को देखकर सिखा था।

वे दिन रात कड़ी मेहनत किया करते थे, सुबह से शाम तक चुनाई का काम करना और हम भाई-बहनों को पढ़ने भेजना, फीस देना, कॉपी-किताबें उपलब्ध कराना, हम सबका हर तरह से ध्यान रखना, हम पढ़-लिखकर काबिल बन जाए, यही उनका सपना था। सन् 1952-53 की घटना मुझे आज भी याद है, जब कांकरोली में हाई स्कुल नहीं था और हम सब विद्यार्थी नगर भ्रमण करते और नारे लगाते वर्मा वोटों के चक्कर को छोड़ दो, कांकरोली में हाई स्कुल खोल दो, आदि। उस समय श्री बालकृष्ण विद्याभवन विद्यालय में गांव के कुछ गणमान्य व्यक्तियों ने भूख हड़ताल भी हाईस्कुल खुलवाने के लिए

की। स्कुल के बाहर ही श्री देवीलालजी को उस समय एक 10 रूपए का नोट मिला, जिसे उन्होंने जिस सज्जन का था, उस तक पहुंचाया, उनकी इस ईमानदारी के लिए उनकी खूब प्रशंसा हुई। सूचना पट्ट पर उनका नाम इस ईमानदारी के लिए कई दिनों तक अंकित रहा। मधुजी बोले उनकी ईमानदारी और सख्त निष्ठा के कारण ही हम चारों भाई पढ़–लिखकर समाज में सम्मान के पात्र बने। मैं दुर्गाशंकर मधु बीए, बीएड कर व्याख्याता बन सेवानिवृत हूं। मेरा छोटा भाई द्वारकाप्रसाद बीए कर बम्बई के चित्रकला में आईजीसीडीसी का कलाकार बना। उससे छोटा भाई श्री कमलचन्द्र मैकेनिकल इंजीनियर बन सार्वजनिक निर्माण विभाग से सेवानिवृत हुआ और सबसे छोटा ओमप्रकाश सीविल इंजीनियर बनकर अपना कार्य कर रहा है।

दोनों बहिनों पनकी बाई और बसन्ती बाई को भी पढ़ा–लिखा कर ससुराल विदा किया। एक अच्छे और आदर्श माता–पिता इससे ज्यादा अपनी औलाद के लिए और क्या कर सकते हैं। अपनी संतानों के लिए मेरे चचेरे भाई श्री किशन धीरज एक लेखक हैं, उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है, बीच में ही मैं बोल पड़ा पर हम तो धीरज को क्षणिकाओं का बादशाह मानते हैं। उनकी क्षणिकाएं आज भी गुदगुदाती है। श्री धीरज भी टेलीफोन एक्सचेंज की सर्विस से रिटायर हो लेखन कार्य में व्यस्त हैं।

श्री देवीलालजी सिंचाई विभाग की पाल पर जो खारी फीडर का नक्शा बना हुआ है, उसको भी श्री ओमप्रकाश के सान्निध्य में बनाया, उसी के पास बने मगर को भी द्वारका और देवीलालजी ने सुन्दर आकार दिया, जो जयकिशनजी ठेकेदार के निर्देशन में बना।

नक्शे और मगर के निर्माण में देवीलालजी और काकाजी की मेहनत मशक्कत काम आई । मधुजी अपने पिताजी की याद में खो गए, मधुजी जरा भावुक हो बोले पिताजी की ईमानदारी, मेहनत और लगन के कारण ही उनके आशिर्वाद से हम सभी भाई सानन्द, सकुशल अपना जीवन–यापन कर रहे हैं। भाई अफजलजी आपने मेरे पिता और माता की यादें ताजा कर दी। आपका बहुत बहुत साधुवाद और धन्यवाद ।

सन् 1913 में जन्म लेकर सन् 1986 में आपका देवलोक गमन हुआ। ऐसे कर्मठ और सच्चा जीवन जीने वाले मेरे गांव के इस आदर्श दम्पति को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
कांकरोली, 98284-75288

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी
होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन
मो. 9214384205 **9602997715**

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) : वायु की गुणवत्ता मापन हेतु प्रयास

वर्तमान समय में पर्यावरण का प्रदूषित होते जाना सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली समस्या है। वायुमंडल हमारे स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है, यह जानते हुए भी हमने पर्यावरण के घटकों को दयनीय स्थिति तक परिवर्तित कर दिया है। जिसके घातक परिणाम हमें स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। ऐसी भयावह स्थिति में पर्यावरण पर ध्यान न देना भविष्य में आत्महत्या किया जाना ही सिद्ध होगा। इसलिए आज ही पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए तथा उसमे सुधार हेतु हर सम्भव प्रयास करना होगा।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भारत की ही नहीं पूरे विश्व के लिए एक नई चुनौती बन चुकी है। भारत के साथ अन्य कई देश भी इस समस्या के समाधान को लेकर जूझ रहे हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में प्रत्येक वर्ष प्रदूषण की स्थिति बहुत तेजी से बिगड़ जाती है। अब यह स्थिति जयपुर तक भी दस्तक देने लगी है। प्रत्येक वर्ष के अक्टूबर और नवम्बर महीने में प्रदूषण से स्थिति बहुत तेजी से बिगड़ जाती है। इस समस्या को देखते हुए भारत में राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 17 सितंबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत देश की राजधानी नई दिल्ली में आरम्भ किया गया था।

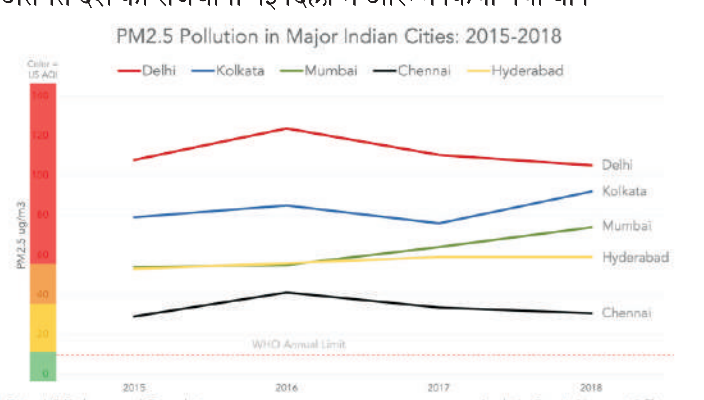

यहां पर यह सवाल उठता है कि आखिर AQI होता क्या है। AQI– एयर क्वालिटी इंडेक्स, दरअसल हर देश में वायु की गुणवत्ता की माप के लिए एयर क्वालिटी इंडेक्स बनाये गए हैंए जो कि हमें ये बताते हैं कि जिस हवा में हम जीवन जी रहे हैंए उसमें कितनी शुद्धता हैए उसमें नाइट्रोजन डाइऑक्साइडए कार्बन मोनोऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड की कितनी मात्रा है। AQI का पूरा नाम Air Quality Index, एयर क्वालिटी इंडेक्स है, जिसे हिंदी में वायु गुणवत्ता सूचकांक कहते हैं। AQI के मानक में हवा की क्वालिटी के आधार पर इस इंडेक्स में 6 केटेगरी बनाई गई हैं। जैसे अच्छी, संतोषजनक, थोड़ा प्रदूषित, खराब, बहुत खराब और गंभीर, जैसे जैसे हवा की गुणवत्ता खराब होती जाती है, वैसे ही रैंकिंग अच्छी से ख़राब और फिर गंभीर की श्रेणी में आती जाती है।

AQI यदि 0– 50 के मध्य होता है, तो उसे अच्छा माना जाता हैं। यदि 51– 100 को 'संतोषजनक' माना जाएगा। अगर AQI 101– 200 को 'ठीक– ठाक' स्थिति में होगा। यदि AQI 201– 300 को 'खराब' स्थिति में होगा, अगर इससे भी ज्यादा 301– 400 को 'बहुत खराब' कहा जाएगा और यदि 401– 500 को भीषण बहुत माना जाता है।

0– 50 = Good (अच्छा)

51– 100 = Average (संतोषजनक)

101–200 = Slightly (थोड़ा प्रदूषित)

201–300 = Poor (खराब)

301–400 = Very Poor (बहुत खराब)

401– 500 = Severe (भीषण– खतरनाक)

एयर क्वालिटी इंडेक्स मुख्य रूप से 8 प्रदूषकों (Pm10, PM 2.5, NO2, SO2, CO, O3, NH3 and Pb) से मिलाकर बनाया जाता है। यहां गौरतलब है कि वायु प्रदूषण का मतलब है हवा में सल्फर डाइऑक्साइड (SO2), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO2) और कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) की मात्रा से होता है। इसके लिए अल्पकालिक (औसतन 24 घंटे की अवधि के) राष्ट्रीय व्यापक वायु गुणवत्ता मानक तय किए गए हैं।

AQI Category	AQI	Concentration range*							
		PM_{10}	$PM_{2.5}$	NO_2	O_3	CO	SO_2	NH_3	Pb
Good	0 - 50	0 - 50	0 - 30	0 - 40	0 - 50	0 - 1.0	0 - 40	0 - 200	0 - 0.5
Satisfactory	51 - 100	51 - 100	31 - 60	41 - 80	51 - 100	1.1 - 2.0	41 - 80	201 - 400	0.5 - 1.0
Moderately polluted	101 - 200	101 - 250	61 - 90	81 - 180	101 - 168	2.1 - 10	81 - 380	401 - 800	1.1 - 2.0
Poor	201 - 300	251 - 350	91 - 120	181 - 280	169 - 208	10 - 17	381 - 800	801 - 1200	2.1 - 3.0
Very poor	301 – 400	351 - 430	121 - 250	281 - 400	209 - 748*	17 - 34	801 - 1600	1200 -1800	3.1 - 3.5
Severe	401 - 500	430+	250+	400+	748+*	34+	1600+	1800+	3.5+

* CO in mg/m^3 and other pollutants in $\mu g/m^3$; 2h-hourly average values for PM_{10}, $PM_{2.5}$, NO_2, SO_2, NH_3, and Pb, and 8-hourly values for CO and O_3.

PM को पर्टिकुलेट मैटर या कण प्रदूषण भी कहा जाता है, जो कि वातावरण में मौजूद ठोस कणों और तरल बूंदों का मिश्रण है। हवा में मौजूद कण इतने छोटे होते हैं कि आप नग्न आंखों से भी नहीं देख सकते हैं। पर्टिकुलेट मैटर में PM 2.5 और PM 10 बहुत खतरनाक होते हैं।

एनसीआर में पीएम- 10 का स्तर 478 और पीएम- 2.5 भी 154 तक रिकॉर्ड हो रहा है, जो खतरनाक हालात की ओर ईशारा कर रहे हैं। प्रदूषण की वजह से इन दिनों ये दो शब्द पीएम- 10 और पीएम- 2.5 सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। वास्तव में, पीएम- 10 और पीएम 2.5 ही प्रदूषण फैलाने में सबसे बड़ा किरदार निभाते हैं। ये कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के जरिए आसानी से हमारे फेफड़ों में पहुंच जाते हैं और सेहत के दुश्मन बन जाते हैं। आमतौर पर लोग इन कणों के बारे में नहीं जानते, लेकिन इससे बचाव के लिए इसे जानना बेहद जरूरी है। पीएम- 2.5 का कण कितना छोटा होता है, इसे जानने के लिए ऐसे समझिए कि एक आदमी का बाल लगभग 100 माइक्रोमीटर का होता है। इसकी चौड़ाई पर पीएम 2.5 के लगभग 40 कणों को रखा जा सकता है।

पीएम 10 : पीएम 10 को पर्टिकुलेट मैटर (Particulate Matter) कहते हैं। इन कणों का साइज 10 माइक्रोमीटर या उससे कम व्यास होता है। इसमें धूल, गर्दा और धातु के सूक्ष्म कण शामिल होते हैं। पीएम 10 और 2.5 धूल, कंस्ट्रक्शन और कूड़ा व पराली जलाने से ज्यादा बढ़ता है। PM 10 गैस के रूप में होता है, जब आप सांस लेते हैं तो ये कण आपके फेफड़ों में चले जाते हैं और शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। पीएम 2.5 : पीएम 2.5 हवा में घुलने वाला छोटा पदार्थ है। इन कणों का व्यास 2.5 माइक्रोमीटर या उससे कम होता है। पीएम 2.5 का स्तर ज्यादा होने पर ही धुंध बढ़ती है और साफ दिखना भी कम हो जाता है और चारों ओर कोहरे जैसा वातावरण हो जाता है, जैसा कि आज दिल्ली के साथ हो रहा है।

पीएम 10 का सामान्य लेवल 100 माइक्रो ग्राम क्यूबिक मीटर (एमजीसीएम) होना चाहिए। पीएम 2.5 का नॉर्मल लेवल 60 एमजीसीएम होता है। इससे ज्यादा होने पर यह नुकसानदायक हो जाता है। जैसे ही प्रदूषण अपने नॉर्मल इंडेक्स (air quality index) से ऊपर जाता है, आंख के लिए खतरा बढ़ने लगता है। इस वक्त तो एक्यूआई 50 की जगह एक हजार के स्तर तक पहुंच गया है, जो सेहत के लिए बहुत ही खतरनाक है। इतने प्रदूषण में माइक्रो पार्टिकल्स आंख में जमा हो जाते हैं, लेकिन हमें दिखते नहीं। इससे एलर्जी, जलन, खुजली, पानी आने और लाली होने की समस्या आने लगती है। यह एलर्जी लंबे समय तक बनी रहेगी, तो आंख की इम्यूनिटी कम हो जाएगी, जिससे इंफेक्शन और अल्सर होने का खतरा बढ़ जाएगा।

वायु प्रदूषण के मुख्य कारण

- हवा के बहाव में कमी आना।
- विभिन्न अवसरों पर अधिक बारूद जलाना।
- अधिक मात्रा में पराली जलाना।
- चिमनियों से निकलने वाले धुआं।
- वाहनों की संख्या में तेजी से हो रही वृद्धि।
- गन्दा कचरा या प्लास्टिक जलाना।
- कारखानों से निकलने वाला धुंआ तथा रसायन पदार्थों से दूषित वायु।
- आणविक संयत्रों से निकलने वाली गैस तथा धूल-कण।
- जंगलों की अनियन्त्रित कटाई।
- कोयले व तेल शोधन कारखानों का धुंआ।

वायु प्रदूषण रोकने के उपाय :

- व्यापक रूप से वृक्ष लगाए जाने चाहिए।
- औद्योगिक क्षेत्रों के पास हरित पट्टियों का उपयोग।
- ऐसे पेड़ लगाए जाए, जो चिमनियों का धुंआ और घातक गैस को अवशोषित करने की क्षमता रखते हो।
- वायुमण्डल में फैलने वाली घातक गैसों की मात्रा निर्धारत मानकों के ही मुताबिक रखा जाए।
- औद्योगिक कंपनियों में वायु शुद्धिकरण यंत्र होने चाहिए।
- पेट्रोल कारों में कैटेलिटिक कनवर्टर लगाने से वायु प्रदूषण को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
- पेट्रोल और डीजल कारों का प्रयोग कम होना चाहिए।
- बैटरी और सीएनजी कारों को प्रयोग में लाए।
- जीवाश्म ईंधनों का प्रयोग कम कर सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे विकल्प पर्यावरण को बचाने में सहायक हो सकते हैं।

भारत सरकार ने नई दिल्ली में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। इनमें ऑटो ईंधन नीति के अनुसार स्वच्छ ईंधन की सप्लाई, सार्वजनिक परिवहन के लिए गैस ईंधन का इस्तेमाल, प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र, कठोर उत्सर्जन मानक और उनका परिपालन, ताप बिजली परियोजनाओं में कोयले का इस्तेमाल, सार्वजनिक परिवहन को मजबूत बनाना, मेट्रो रेल प्रणाली का विस्तार, जेनसेट आदि के लिए संशोधित उत्सर्जन मानकों का कार्यान्वयन शामिल है। तथापि आम आदमी के सहयोग के बिना इस समस्या से निजात पाना मुश्किल है।

डॉ. संजय गौड़
प्रोफेसर, लेखक भवानीनगर
राजसमंद, मो. 97846-52469

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास (Self Confidence) क्या है ?

आत्मविश्वास है खुद पर यकीन करना, खुद पर विश्वास और अपनी क्षमताओं पर विश्वास।

यह आत्मविश्वास और हिम्मत ही वह ऊर्जा है, जो हमें जीवन जीने के योग्य बनाती है। नकारात्मक परिस्थितियों से निकलने में मदद करती है।

चलिए एक कहानी सुनते हैं... एक बार एक व्यक्ति कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक हाथी दिखाई दिया, उसे एक बात बहुत आश्चर्यजनक लगी कि वो हाथी एक छोटी, बहुत पतली रस्सी से बंधा हुआ था। आश्चर्य इस बात का था कि कैसे एक इतना बड़ा जानवर कमजोर रस्सी से बंधा रह सकता है, जबकि वह चाहे तो एक झटके में उस रस्सी को तोड़कर मुक्त हो सकता है, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहा है, क्यों ? उसने पास में ही खड़े हाथी के मास्टर से अपनी जिज्ञासा पूछी कि क्या ये हाथी भागने का प्रयास नहीं करता है ? हाथी के मास्टर ने जवाब दिया- जब यह हाथी बहुत छोटा था, तब मैं इसी रस्सी के सहारे इसे बांधा करता था, तब यह रस्सी इसके लिए इतनी मजबूत थी कि यह इस रस्सी को नहीं तोड़ पाता था, तब इसने इस रस्सी को तोड़ने के प्रयास भी किए और विफल रहा। अन्तत: इसने रस्सी को तोड़ पाना असंभव मान लिया और हार कर रस्सी पर जोर लगाना छोड़ दिया। धीरे- धीरे यह बड़ा होता गया, लेकिन पुरानी नाकामी की वजह से और आत्मविश्वास की कमी से इसने पुन: प्रयास ही नहीं किया और आज एक वयस्क हाथी बलवान होने के बावजूद गुलामी की पतली रस्सी से बंधा है।

कितनी हैरानी की बात है, है ना।

इसी हाथी की तरह हम में से कितने ही लोग ऐसे है, जो जीवन में इसलिए हारे हुए रहते हैं, जो यह मान लेते हैं कि हम तो यह काम नहीं कर सकते हैं। क्योंकि हम इसमें पिछली बार विफल रहे थे। वे चुंकि अपने को एक सीमित सोच में बांध लेते हैं और प्रयास करने से भी कतराते हैं। धीरे- धीरे उनका आत्मविश्वास और कम हो जाता है एवं वो हार मानकर बुझी- बुझी सी जिन्दगी जीने लग जाते हैं।

इसलिए आप भी अपने मन की सीमित सोच से बाहर निकलिए, अपनी क्षमताओं को पहचानिए, देखिए एक खुबसूरत सी दुनिया बाहर आपका इंतजार कर रही है।

अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव अपना सकते हैं-

(1) जीवन में छोटे- छोटे लक्ष्य बनाए, उन लक्ष्यों को पूरा करें।

(2) अपने अतीत की उपलब्धियां याद करें और उनसे प्रेरणा लेकर अपने को उससे बेहतर बनाने के बारे में सोचें।

(3) गलती करने से ना डरें, बल्कि गलतियों से सीखें और आगे बढ़ते रहे।

(4) सबके प्रति अपना आभार व्यक्त कीजिए, हमेशा मुस्कुराते रहिए और नकारात्मक परिस्थितियों में अपने आप पर संयम रखिए।

(5) अपनी सेहत का ध्यान रखिए। प्रतिदिन योग एवं व्यायाम एवं Meditation का समय स्वयं को दीजिए।

(6) कपड़े पहनने का तरीका बदले : Confident रहने के लिए हमें अपने आपको **Groom** करना बहुत जरूरी है।

(7) आंखों में आंखें मिलाकर विनम्रता से बात करना सीखें।

आत्मविश्वास के बिना जीवन एक ऐसी कार के समान है, जिसमें पेट्रोल नहीं है। इसलिए जीवन रूपी कार में आत्मविश्वास रूपी ईंधन को बढ़ाते रहिए।

''अगर खुद पर यकीन हो तो अंधेरे में भी रास्ते मिल जाते हैं।''

तो मित्रों, आपके जीवन में सफलता और खुशी के लिए एक मत्त्वपूर्ण कुंजी 'आत्मविश्वास' है और आत्मविश्वास के लिए एक महत्त्वपूर्ण कुंजी तैयारी है।

नीलम बोहरा
Personality Devlopment
Coach (व्यक्तित्व विकास कोच)
कांकरोली राजसमंद

यदि आप अपने व्यक्तित्व का और विकास करना चाहते हैं, तो आप संपर्क कर सकते हैं-

Sessions on personality development for students, women, parents, corporates

Contract : Mob. 94603-29528, neelam1.babli@gmail.com

प्राणायाम

प्राणायाम योग का चौथा चरण है, यह शरीर व मन दोनों को स्वस्थ रखने का कार्य करता है। साधना पथ में प्राणायाम का विशेष महत्व है। इससे हमारा शरीर तेजस्वी बनता है, रोग निरोधक क्षमताओं का विकास होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। हमारे मानसिक विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष आदि इन सभी को प्राणायाम से दूर किया जा सकता है।

प्राणायाम (अनुलोम-विलोम) कैसे करें :

आसन या कार्पेट बिछाकर बैठें। पद्मासन, वज्रासन, सुश्वासन किसी भी आसन में बैठ कर नाक के एक छिद्र को बंद करें और दूसरे छिद्र से लयबद्ध लम्बा श्वास लें और दूसरे छिद्र से श्वास बाहर निकालें। इस प्रकार बार- बार ऐसा करें। नाक के दो छेद है- दाहिनी तरफ जो छेद है, वो सूर्य भेदी कहलाता है और बाईं ओर जो छेद है, वह चन्द्र भेदी कहलाता है। अगर सर्दी ऋतु है, तो सूर्य भेदी प्राणायाम से शुरू करेंगे और अगर गर्मी है, तो चन्द्रभेदी प्राणायाम से शुरू करेंगे। जितना समय श्वास लेने में लगे, उतना ही समय श्वास निकालने में लगें, आपका ध्यान श्वास पर केन्द्रित होना चाहिए।

प्राणायाम का प्रभाव :

प्राणायाम से रक्त संचरण सुव्यवस्थित होता रहता है। फेफड़े स्वस्थ रहते हैं। दूषित वायु का निराकरण होता है। प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन मिलती है। प्राणायाम शारीरिक दृष्टि से सर्वोत्तम व्यायाम है।

रोग निवारण : शरीर के दोष नष्ट होकर शरीर स्वस्थ व पुष्ट बनता है। सूर्य भेदी प्राणायाम चित्तवर्धक, जरादोषनाशक, वातहर, कपालदोष, कृमिदोष नाशक है।

उज्जायी प्राणायाम : कफ रोग, जलोदर, आमवात, क्षय, ज्वर प्लीहा को नष्ट करता है।

शीतली प्राणायाम : कफ, पित्त, प्लीहा, अजीर्ण आदि के लिए उत्तम है। इन रोगों को नष्ट करता है।

भस्त्रिका प्राणायाम : वात, पित्त, कफ तीनों को दूर करके शरीर में ऊर्जा की वृद्धि करता है, जिससे शरीर स्वस्थ रहता है।

नियमित रूप से हम प्रात:काल खाली पेट शौच करने के पश्चात हो सकें तो खुले स्थान में साफ स्वच्छ स्थान हो, प्राणायाम करने से हम स्वस्थ रहेंगे। किसी भी प्रकार का कोई रोग हमें नहीं सताएगा, कम से कम पन्द्रह मिनट तक मन को प्राणायाम मन को एकाग्र रखकर करें।

साबिर शुक्रिया
जीवन विज्ञान व
योग प्रशिक्षक, नाथद्वारा

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

कुंभ सेल्फियाना

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय यूपी 8604112963

मैं सुबह- सुबह अपने मोबाइल में उंगली कर रहा था। आप लोग गलत मत समझें, पहले उंगली करने को बुरा मानते थे, लेकिन आजकल इसके बिना काम ही नहीं चलता। मोबाइल भी डाइटिंग अपनाने लगे हैं न, इसलिए स्लिम बॉडी में बटनों का झंझट ही नहीं होता। ऐसे मोबाइल फोनों को उंगली करना ही पड़ता है। मोबाइल फोन मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। लोग खाना छोड़ सकते हैं, पर खाते वक्त मोबाइल छुड़वाना भैंस के आगे बीन बजाने जैसा है। क्रेता के सपूत प्रात:काल उठकर माता- पिता और गुरु को नमन करते थे। द्वापर के सपूत सुबह उठकर माखन- रोटी के लिए मचल जाते थे, किन्तु कलियुगी संतानें समझदार हो गई हैं, उन्हें ज्ञात है कि मम्मी- पापू रातभर पार्टियों में डांस करके थक गए होंगे, तो नींद में खलल नहीं डालनी चाहिए। इस जघन्य अपराध से डांट का फव्वारा भी फूट सकता है। आजकल के बच्चे कराग्रे वसते लक्ष्मी...की जगह कराग्रे थामे मोबाइल दिखते हैं।

मैं भी बातों- बातों में तराजू लेकर बच्चों को युग के बटखरों से तौलने लगा, मतलब तुलना करने लगा। चलिए लौटते हैं, तो मोबाइल में फेसबुक की वॉल पर नजरें गड़ा रहा था, तो ऐसा लगा कि पूरा फेसबुक पाप रहित हो गया था या पुण्य के सागर में भयंकर ज्वार आ गया था। लगभग हर तीसरे व्यक्ति की प्रोफाइल गंगा स्नान के अर्धनग्न प्रदर्शन से पटी हुई थी। हो भी क्यों न, मौका भी है और दस्तूर भी।

कुछ माह पहले के इलाहाबाद और न्यू प्रयागराज में यूनेस्को की थाती में समाए मेले का आयोजन हो रहा था। इस मेले के लिए उत्तरप्रदेश सरकार ने दिल और खजाना दोनों ओपन कर दिए थे। दिव्य कुम्भ, भव्य कुम्भ बनाने के चक्कर में सरकार यह भी बिसरा गई कि यह अर्ध कुम्भ था। सरकार शब्द स्त्रीलिंग है और स्त्रियों में मेकअप की तृष्णा तो जगजाहिर है। मेकअप दो ही कारणों से होता है कुरूपता को छुपाने के लिए या फिर रिझाने के लिए। इस बार के कुंभ मेले के दो मुख्य आकर्षण थे, पहला सेल्फी पॉइंट, जिसमें एक जगह बड़े- बड़े अक्षरों में हिंग्लिश में कुंभ 2019 लिखकर खड़ा किया गया था, जो मल्टीमीडिया पीढ़ी को याद दिलाता कि जो तुम्हारी चिथड़ा जींस में सचल दूरभाष यंत्र है, उसको निकालो और लग जाओ। विभिन्न कीड़े- मकोड़ी भाव- भंगिमाओं को कैप्चर करने में। इस तरह की क्रिया को आधुनिक शब्दकोशों में सेल्फी लेना कहते हैं। भारत में इस रोग का प्रसार सन् 2014 के बाद प्रारंभ हुआ, जब ब्लैक रतन धन लायो के संदर्भ में जग घुमिया का सिलसिला आरंभ हुआ था। 'करिया पइसा' तो नहीं आया पर 'स्वयं खींचू' का एक नायाब तरीका जरूर मिल गया। कुंभ के सेल्फी बिन्दु पर विभिन्न जन सलिलाओं का संगम देखने को मिल रहा था। इतनी भीड़ तो मॉर्डन भारद्वाजों के कॉटेजों में नहीं थी। सेल्फी के समय लोगों के हाथ कानून से भी लम्बे और मुंह इतने तीखे कि नाग बाबा भी सिकुड़कर 'बंबउरी' में दुबक जाएं। कुंभ मेले का दूसरा आकर्षण विमान से पुष्प वर्षा थी। अभी तक तो हेलिकॉप्टर से बाढ़ग्रस्त इलाकों में फूड पैकेट गिरते देखे थे, लेकिन उत्तरप्रदेश में 2017 में जब से सत्ता परिवर्तन हुआ है, तब से हेलिकॉप्टर चालकों को बरसात का इंतजार नहीं करना पड़ता, क्योंकि अब उन्हें पैकेट से हल्के फूल गिराने का काम जो मिल गया है। कभी अयोध्या में राम भेषधारी विदेशी मेहमानों पर तो कभी प्रयाग में धार्मिकों पर फूल गिराए ही जाते हैं।

इस बार के मेले में स्वच्छ भारत की थीम को चरितार्थ किया गया था। इसी के चलते वास्तविक भिखारी इन सेल्फियों में नहीं दिख रहे थे। हां फैशनेबल भिखारी खूब नजर आ रहे थे। चिंदी- चिंदी जींस और पिद्दी सी स्कर्ट में इंटरनेशनल भिखारी भी किसी पंडे की स्वर्ग प्रदाता चौकियों पर फोरहेड पर सैंडल लगवाते दिख जाएं तो चौकिएगा नहीं, क्योंकि अंग्रेजी में चंदन को सैंडल ही कहते हैं और विदेशियों को भारतीय सैंडल बहुत पसंद है।

मैं अपने मोबाइल के ऊपर उंगली रखकर कहना चाहता हूं कि जितनी बातें बताई हैं, वे सब सेल्फी के कठघरे में बैठकर कही गई हैं, क्योंकि उसमें खड़े होना संभव नहीं है।

चुनावी चर्चा

निकल पड़े हैं रणबांकुरे

राजसमन्द विधायक किरण माहेश्वरी के निधन पर जनता में एक तरफ दुख की लहर हैं, वहीं दोनों पार्टियों के नेताओं में अन्दर ही अन्दर भावी विधायक बनने के लिए खुशी की लहर भी चल रही है। इन दिनों ठंड बहुत बढ़ गई हैं, मगर राजनीति के बाजार में माहौल बड़ा गरम है। टिकट के दावेदार अपने समर्थकों से सोशल मीडिया पर माहौल बना रहे हैं। कुछ नेता तो सोशल मीडिया पर फैल रही अफवाहों के बीच अपने नाम की चर्चा सुनकर ही कुप्पा हो रहे हैं। सभी दावेदारों की दावेदारी के अलग अलग आधार है। कोई जाति बाहुल्य को आधार बनाकर दावेदारी कर रहे हैं, तो कोई दावेदार अपने युवा नेता के रूप में बेहतरीन कार्य को आधार बनाकर दावेदारी जता रहे हैं। वहीं कोई दावेदार हाईकमान तक अपनी पहुंच को आधार बना रहे हैं। इन भाजपा नेताओ में कोई स्व. किरण माहेश्वरी के निकट थे, तो कोई विधानसभा नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया के चहेते माने जाते हैं। वर्तमान सासंद दीया कुमारी के भी कुछ दावेदार करीबी बताए जा रहे हैं। जिस प्रकार रणभेरी सुनकर रजवाड़े के रणबांकुरे युद्ध के लिए मैदान में दौड़ पड़ते थे, ठीक उसी प्रकार चुनावी रणभेरी सुनते ही इन दिनों रोज नए- नए रणबांकुरों के नाम सुनने को मिल रहे हैं।

स्थानीय उम्मीदवारों की बड़ी खेंप के बावजूद बाहरी नाम भी चर्चा में है। भाजपा के विभिन्न पदों पर लम्बे समय तक रहे महेन्द्र कोठारी, नगरपालिका के पूर्व चैयरमेन अशोक रांका, भाजयुमो जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, पूर्व भाजयुमो अध्यक्ष महेन्द्रसिंह चौहान, पूर्व भाजपा जिला कोषाध्यक्ष मानसिंह बारहठ सहित ग्रामीण मण्डल अध्यक्ष गणेश पालीवाल भी दावेदारी कर रहे हैं। दिवंगत सांसद हरिओम सिंह के पुत्र करणवीर सिंह राठौड़ की दावेदारी की भी चर्चा चल रही है। कुछ लोग दिवंगत किरण माहेश्वरी के परिवार के सदस्य की भी चर्चा कर रहे हैं, मगर उनकी ओर से अभी कोई पुष्टी नहीं की गई हैं।

इसी तरह कांग्रेस में भी हलचल प्रारंभ हो गई हैं। सामान्य सीट होने से ब्राह्मण, जैन, राजपूत अपनी दावेदारी प्रमुखता से करना चाह रहे हैं। वहीं ओबीसी दावेदार अपने जाति बाहुल्य के आधार पर दावेदारी कर रहे हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी नारायण सिंह भाटी, रेलमगरा ब्लॉक अध्यक्ष सुन्दर कुमावत, पूर्व में दो बार चुनाव लड़ने वाले हरिसिंह राठौड़, नगरपालिका पूर्व अध्यक्ष आशा पालीवाल एवं युवा नेता कुलदीप शर्मा के नाम भी चर्चा में है। कुछ नेता अपने नाम की चर्चा को अफवाह बता रहे हैं, वहीं कुछ नेता खुलकर दावेदारी जता रहे हैं। अब देखना यह होगा कि इस राजनीति के स्वयंवर में राजसमन्द विधायक रुपी दुल्हन किसे अपना वर स्वीकार करती है।

The Marutinandan Grand

LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA

The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001

www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729-80901
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To